रजिस्ट्री सं० डी०-(डी०)—73

REGISTERED NO. D-(D)—73

CENTRAL SECRETARIAT
No.
Date
GOVT. OF INDIA

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 17] नई दिल्ली, शनिवार, अप्रैल 28, 1979 (वैशाख 8, 1901)
No. 17] NEW DELHI, SATURDAY, APRIL 28, 1979 (VAISHAKA 8, 1901)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।
Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a Separate Compilation.

विषय-सूची

	पृष्ठ
भाग I—खण्ड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	319
भाग I—खण्ड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	529
भाग I—खण्ड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	25
भाग I—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	357
भाग II—खण्ड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	—
भाग II—खण्ड 2—विधेयक और विधेयकों संबंधी प्रवर समितियों की रिपोर्टें	—
भाग II—खण्ड 3—उपखण्ड (i)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारियों द्वारा जारी किए गए विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए साधारण नियम (जिनमें साधारण प्रकार के आदेश, उप-नियम आदि सम्मिलित हैं)	1135
भाग II—खण्ड 3—उप खण्ड (ii)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारियों द्वारा विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए आदेश और अधिसूचनाएं	1109
भाग II—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा अधिसूचित विधिक नियम और आदेश	133
भाग III—खण्ड 1—महालेखापरीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल प्रशासन, उच्च मंत्रालयों और भारत सरकार के अधीन तथा संलग्न कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	3185
भाग III—खण्ड 2—एकस्व कार्यालय, कलकत्ता द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं और नोटिस	223
भाग III—खण्ड 3—मुख्य आयुक्तों द्वारा या उनके प्राधिकार से जारी की गई अधिसूचनाएं	33
भाग III—खण्ड 4—विधिक निकायों द्वारा जारी की गई विधिक अधिसूचनाएं जिनमें अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल है	1235
भाग IV—गैर सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी संस्थाओं के विज्ञापन तथा नोटिस	53

CONTENTS

	PAGE
PART I—SECTION 1.—Notification relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	319
PART I—SECTION 2.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	529
PART I—SECTION 3.—Notifications relating to non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministry of Defence	25
PART I—SECTION 4.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Officers issued by the Ministry of Defence	357
PART II—SECTION 1.—Acts, Ordinances and Regulations.	—
PART II—SECTION 2.—Bills and Reports of Select Committees on Bills	—
PART II—SECTION 3.—SUB-SEC. (i)—General Statutory Rules (including orders, bye-laws etc. of general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories) ..	1135
PART II—SECTION 3.—SUB-SEC. (ii).—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories) ..	1109
PART II—SECTION 4.—Statutory Rules and Orders notified by the Ministry of Defence ..	133
PART III—SECTION 1.—Notification issued by the Auditor General, Union Public Service Commission, Railway Administration, High Courts and the Attached and Subordinate Offices of the Government of India	3185
PART III—SECTION 2.—Notifications and Notices issued by the Patent Office, Calcutta ..	223
PART III—SECTION 3.—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	33
PART III—SECTION 4.—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	1235
PART IV—Advertisements and Notices by Private Individuals and Private Bodies ..	53

भाग I—खण्ड 1

PART I—SECTION 1

(रक्षा मंत्रालय को छोड़ कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 26 जनवरी 1979

सं० 15-प्रेज/79—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियो को उत्कृष्ट वीरता के लिए "कीर्ति चक्र" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते है :—

कुमारी बीना पुत्री श्री योगेश्वर दयाल,
ग्राम : असौढ़ा, थाना : हापुड़
जिला : गाजियाबाद,
उत्तर प्रदेश।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 27 जुलाई 1976)

27/28 जुलाई, 1976 की रात्रि को कुछ शस्त्र डाकुओ ने गाजियाबाद जिले मे असौदा गाव के श्री हरीदत्त पुत्र श्री भद्रदत्त के घर मे घुसने की कोशिश की। शोर-गुल सुनकर पड़ौसी जाग गए और श्री हरीदत्त के घर के बाहर एकत्रित होने लगे। पकड़े जाने के भय से वहां से बच निकलने के लिए दो डाकू श्री योगेश्वर दयाल के घर में कूद पड़े जो उस समय अपने आगन मे सो रहे थे, डाकुओ के आ जाने से जाग उठे और उन्होने उनमे से एक को पकड़ने की कोशिश की। डाकू ने देसी पिस्तौल से उन पर गोली चलाई, जिससे वे जख्मी हो गए। श्री योगेश्वर दयाल को घायल हुआ देख कर उनकी चौदह वर्षीय पुत्री कुमारी बीना ने एक मुसल उठाया और उससे दोनों डाकुओ पर प्रहार करना शुरू किया और उन्हे मार-मार कर जमीन पर गिरा दिया। उनमे से एक डाकू घटनास्थल पर ही मर गया और दूसरा घायल अवस्था में पड़ोसियों की सहायता से जीवित पकड़ लिया गया। डाकुओ से कुछ अवैध हथियार भी प्राप्त हुए।

इस कार्यवाही मे कुमारी बीना ने अदम्य साहस, दक्षता और असाधारण सूझ-बूझ का परिचय दिया।

2. श्री नाथन सिंह, (मरणोपरान्त)
ग्राम : बैधई, जिला : गुना,
मध्य प्रदेश।

(परस्कार की प्रभावी तिथि 29 अप्रैल 1977)

29 अप्रैल, 1977 की रात्रि को एक .12 बोर की बन्दूक, लाठियों और दरातियों से लैस दस डाकू ग्राम बैधई के श्री बदाम सिंह पुत्र श्री खुमान सिंह नन्दवंशी के घर में घुस गए, और उन्होने घर मे रहने वालों को पीटना और उनका माल असबाब लूटना शुरू कर दिया। श्री नाथन सिंह पुत्र श्री रामलाल यादव जो निकट ही रहते थे, चीख-पुकार सुन कर और गोली की आवाज सुनते ही लाठी उठा कर श्री बदाम सिंह के घर की ओर भागे। रास्ते में उन्होने दूसरे पड़ोसी श्री दलीप सिंह को जगाया और उसे उक्त घटना के बारे मे बताया। जब वे श्री बदाम सिंह के घर पर पहुचे तो डाकू भबूत सिंह से उनकी मुठभेड हो गई। डाकू भबूत सिंह ने अपनी बन्दूक से श्री नाथन सिंह पर गोली चलाई, किन्तु निशाना चूक गया। श्री नाथन सिंह ने डाकू पर लाठी से प्रहार किया जिसके परिणामस्वरूप डाकू अपनी बन्दूक न चला सका। श्री दलीप सिंह भी घटनास्थल पर पहुंच गए और उन्होने अपनी लाठी से उस डाकू पर प्रहार किया, जो डाकू भबूत सिंह की सहायता के लिए आया हुआ था। खतरे का आदेश होने पर डाकू भाग निकले किन्तु श्री नाथन सिंह ने उनका पीछा किया। कुछ दूरी के बाद डाकू भबूत सिंह गिर पड़ा और श्री नाथन सिंह उस पर टूट पड़े। इस हाथापायी मे डाकू को जैसे ही मौका मिला, उसने अपनी बन्दूक से गोली दाग दी जिससे श्री नाथन सिंह की घटनास्थल पर ही तत्काल मृत्यु हो गई। डाकू भबूत सिंह को भी गंभीर चोटें आईं जिनके कारण उसकी भी वहीं पर मृत्यु हो गई।

इस कार्यवाही में श्री नाथन सिंह ने उच्च कोटि के अदम्य साहस और दृढ़ता का परिचय दिया।

3. 7998461 नायक प्रताप सिंह, (मरणोपरान्त)
इंटैलिजेंस कोर०

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 10 जून 1977)

10 जून, 1977 को नायक प्रताप सिंह को विरोधी मिजोरम के दरलोवहन गाव की एक चाय की दुकान से अपहरण करके पास के जंगल मे ले गए। वहां इनको निर्ममता से मारा पीटा गया लेकिन इन्होंने अपनी सेना के बारे में कोई सूचना नही दी। उत्पीड़न से अविचलित और अपनी जान के खतरे की परवाह न करते हुए इन्होने अपनी मुक्ति के प्रस्ताव को भी ठुकरा दिया क्योकि इसमे उनको प्रलोभन देकर इनका सहयोग प्राप्त करने का प्रयत्न किया गया था। इसके बाद विरोधियो ने इनकी गर्दन में रस्सी बांध दी और लगभग तीन किलोमीटर तक उन्हें घसीटते हुए ले गए

जब इन्होंने बच निकलने का प्रयत्न किया तो उन लोगों ने इन के सिर पर कुन्दे से प्रहार किया और इसके बाद इनके सिर में बांस की नुकीली खूंटी गाड़ दी।

इस कार्यवाही में नायक प्रताप सिंह ने अदम्य साहस, दृढ़-निश्चय और उच्चकोटि की कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया।

4. श्री कयूम खान, ड्राइवर (मरणोपरान्त)
मध्य प्रदेश सड़क परिवहन निगम

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 23 अगस्त 1977)

50 वर्षीय श्री कयूम खान 1974 से मध्य प्रदेश सड़क परिवहन निगम के नागपुर डिपो में ड्राइवर के पद पर नियुक्त थे। 22 अगस्त, 1977 की रात्रि को उन्हें नागपुर इलाहाबाद रात्रि एक्सप्रैस बस को चलाने की ड्यूटी पर लगाया गया था। वे नागपुर डिपो से निर्धारित समय पर रात्रि के 10 बजे लगभग 50 यात्रियों को लेकर चले। 23 अगस्त, 1977 को बस रात 01.10 बजे सेवनी पहुंची। जबलपुर की ओर चलते हुए बन्दोल पुलिस स्टेशन के पास बस का टायर फट गया जिसकी वजह से बस एक घंटे लेट हो गई।

लगभग 4.30 बजे प्रातः जब बस घुमा पुलिस स्टेशन से दक्षिण की ओर तीन किलोमीटर की दूरी पर मोहगांव के समीप पहुंची तो एक यात्री जो बाद में पहचानने पर सहजाद डाकू निकला, ने अपनी पिस्तौल निकाली तथा ड्राइवर से बस को रोकने को कहा और ऐसा न करने पर भयानक परिणाम होने की धमकी दी। ड्राइवर पर जब इस धमकी का कोई असर नहीं हुआ तो सहजाद ने उसके बाएं कुल्हे पर गोली मार दी। यद्यपि ड्राइवर कयूम खान घायल हो गए थे परन्तु वे इस बस में बैठे यात्रियों की जान-माल के तत्काल खतरे के प्रति सतर्क हो कर अपने दाहिने हाथ से बस स्टयरिंग को संभाले हुए तथा बाएं हाथ से डाकू का सामना करते हुए बस को चलाते ही रहे। डाकू ने ड्राइवर के माथे पर एक और गोली चला दी। यह गोली प्राणघातक सिद्ध हुई और वे वहीं ढेर हो गए जिससे बस एक पेड़ से धीरे से टकराकर रुक गई। इसके बाद सहजाद के अन्य पांच साथी भी खड़े हो गए और उन्होंने दो यात्रियों से क्रमशः 56,000/- रु० और 50,000/- रु० छीन लिए। एक यात्री श्री किशन लाल को घायल कर दिया और फिर समीप के जंगल में भाग गए।

जिला पुलिस ने जंगल की छान-बीन करके इन डाकूओं को उसी दिन पकड़ लिया तथा लूट का माल लगभग सारा माल तथा दो देसी पिस्तौले भी बरामद कर ली।

इस कार्यवाही में श्री कयूम खान ने अदम्य साहस, दृढ़निश्चय और उत्कृष्ट कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

5 जे० सी० 46163 सूबेदार बख्तावर सिंह,
पंजाब रेजिमेंट। (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 30 नवम्बर 1977)

30 नवम्बर, 1977 को सूबेदार बख्तावर सिंह एक फायरिंग बे के० जे० सी० ओ० इंचार्ज थे जहां से इनकी यूनिट के कार्मिक चान्दमारी के दौरान राइफल ग्रेनेड छोड़ रहे थे। अपराह्न लगभग 3.15 बजे एक कार्मिक ने एक राइफल ग्रेनेड छोड़ा कुछ खराबी के कारण ट्यूब और ग्रेनेड लांचर कप में ही रह गए लेकिन सेफ्टी लीवर और प्राइमिंग रिंग उड़ गए और ग्रेनेड ने आग पकड़ ली। फायर नियंत्रक अफसर ने आदेश दिया कि ग्रेनेड सहित राइफल को फायरिंग बे से बाहर दूर फैंक दिया जाए। फायर करने वाले ने राइफल को फैंक तो दिया लेकिन यह फायरिंग बे से लगभग एक मीटर दूर जाकर गिरी। चूंकि ग्रेनेड सहित रायफल दूर सुरक्षित जगह पर नहीं गिरी थी अतः सूबेदार बख्तावर सिंह ने फायरिंग बे से बाहर कूदकर राइफल को उठाया और रेंज में मौजूद अन्य लोगों की सुरक्षा के लिए उसे थोड़ा और आगे फेंका। परन्तु अभी वे आड़ ले ही रहे थे कि ग्रेनेड बीच में ही फट गया। ग्रेनेड से निकले टुकड़ों से वे घायल हो गए और उन्हें गंभीर चोटें पहुंची जिसके कारण थोड़ी ही देर के बाद उनकी मृत्यु हो गई।

इस कार्रवाई में सूबेदार बख्तावर सिंह ने अदम्य साहस, दृढ़ता और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

6. ग्रुप कैप्टन डेजिल कीलर, वीर चक्र (4805)
फ्लाइंग (पायलट)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 27 मार्च 1978)

27 मार्च, 1978 को ग्रुप कैप्टन डैजिल कीलर जब बहुत ऊंचाई पर एक लड़ाकू विमान उड़ा रहे थे तो विमान की कैनोपी उड़ गई और इससे भीषण वेग से चल रही हवा के झोंकों के थपेड़े उन्हें लगने लगे। इनकी आंखों, कान के पर्दों और बाएं हाथ में चोट आई और विमान पर काबू पाने में इन्हें बहुत कठिनाई होने लगी। यद्यपि इन परिस्थितियों में विमान छोड़ देना ही ठीक रहता परन्तु इन्होंने विमान को किसी तरह बचाने का फैसला किया। इन प्रतिकूल परिस्थितियों में जब कि हवा के झोंकों के कारण आगे ठीक प्रकार से दिखाई भी नहीं दे रहा था और वह भी एक आंख से, ये विमान को अड्डे पर वापस ले आए और विमान को सकुशल नीचे उतारा।

दूसरी बार 17 मई, 1978 को, विमान से विमान पर हमला करने के अभ्यास के दौरान तोप की नाल से निकलते ही एक 23 मि० मी० बम फट गया। और बम के किरच से विमान को भी क्षति पहुंची। विमान के विद्युत यंत्रों ने काम करना बन्द कर दिया और विमान का थ्रोटल भी खराब हो गया था। उसकी कोन पूरी तरह से आगे बढ़ गई थी और सहायक इंजन की आवाज और उसके आगे बढ़ने के ढंग से यह साफ लग रहा था कि इंजन का बियरिंग खराब हो गया है। विद्युत यंत्र और रेडियो टेलीफोन काम न करने के कारण ग्रुप कैप्टन कीलर को न तो यह पता

चल सकता था कि क्या खराबी है और न ये कोई सहायता ही मांग सकते थे। यह मानते हुए कि इंजन बियरिंग फेल हो गया है, इन्होंने विमान को सकुशल वापस लाने का फैसला किया। अपनी उड़ान-कुशलता तथा अनुभव से, ये हवाई अड्डे पर वापस लौट आए और फ्लेम-आउट प्रणाली का प्रयोग करते हुए सकुशल भूमि पर उतर आए। थ्रोटल प्रति मिन्ट 60 प्रतिशत परिक्रमण पर अटका हुआ था, इसके बावजूद भी ये विमान को, बिना नुकसान, रोकने में सफल हुए।

इस प्रकार, ग्रुप कैप्टन डेंजिल कीलर ने अदम्य साहस, अनुकरणीय व्यावसयिक कुशलता और असाधारण कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया।

7. जी०/32874 सब ओवरसियर राम दुलारे लाल जनरल रिज़र्व इंजीनियर फोर्स (ग्रेफ) (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 14 सितम्बर 1978)

13 सितम्बर, 1978 को 376 सड़क मरम्मत प्लाटून के सब ओवरसियर राम दुलारे लाल को पहाड़ी सड़क के एक भाग में भूस्खलन के कारण पड़े मलबे को हटाने के कार्य की देखभाल करने के लिए तैनात किया गया। वर्षा के दौरान भूस्खलन स्थल पर काफी ऊंचाई से लगातार पत्थर गिरते रहने के कारण वह जगह काफी खतरनाक मानी गई। जब यातायात के लिए यह सड़क खोली गई थी तभी से उस जगह पर निरन्तर भूस्खलन होता रहा।

उस मलबे को साफ करने के लिए दो डोज़र लगाए गए ताकि सड़क यातायात के लिए फिर से खुल सके। सांय 6 बजे के करीब एक डोज़र के बाएं ट्रेक की जंजीर इडलर और पहिए के दांतों से निकल कर मलबे में फंस जाने से काम करना बंद कर दिया था और ऊपर से लगातार गिरते हुए भारी पत्थरों से डोज़र के टूट जाने अथवा उसके नीचे घाटी में गिर जाने की संभावना थी। यह देख कर श्री राम दुलारे ने, अपनी सुरक्षा की बिल्कुल परवाह किए बगैर सड़क को साफ करने और डोज़र को ठीक करने की व्यवस्था की। वे और उनकी कमान में काम कर रहे सारे आदमी रात भर काम करते रहे।

14 सितम्बर, 1978 की सुबह को, जब काम जारी था, अचानक पहाड़ की चोटी से पत्थर गिरने शुरु हो गए। उन्होंने शीघ्र ही सबको वहां से भाग जाने के लिए कहा परन्तु इतने में ऊपर से एक पत्थर उनकी कनपटी पर लगा और उनकी मृत्यु हो गई।

इस कार्यवाही में सब ओवरसियर राम दुलारे लाल ने अदम्य साहस, दृढ़ता और उच्चकोटि की कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

सं० 16-प्रेज/79:—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को वीरता के लिये "शौर्य चक्र" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. 210729 वारंट अफसर एकम्बरम रमण, रडार फिटर।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—29 अप्रैल, 1977)

28/29 अप्रैल की रात को तकनीकी एरिया गेट पर तैनात रक्षा सुरक्षा कोर का एक संतरी अपनी ड्यूटी छोड़कर अपनी राइफल सहित भाग खड़ा हुआ और रक्षा सुरक्षा कोर की बैरक में सुरक्षा कोर के दो कार्मिकों को गोली से उड़ाकर ताला बंद गेट के निकट सुरक्षा के लिए की गई तारों की दोहरी घेराबन्दी में जा बैठा। उसे पकड़ने के सभी प्रयास असफल रहे। वह राइफल तानकर गेट के निकट खड़ा हो गया और धमकी दी कि जो भी उसके पास आएगा उसे गोली से उड़ा देगा। इस प्रकार तकनीकी एरिया में कोई प्रवेश नहीं कर सकता था। जब उसे पकड़ने के सभी प्रयास असफल हो गए तो कमांडिंग अफसर ने वारंट अफसर एकम्बरम रमण, अर्दली अफसर को स्थिति से अवगत कराया और उसने सशस्त्र वायु सैनिकों और रक्षा सुरक्षा कोर के जवानों को लेकर उस हत्यारे को चारों ओर से घेर लिया। वारंट अफसर रमण एक सैनिक रिवाल्वर लेकर तारों की घेराबन्दी पार कर तकनीकी एरिया के अन्दर गये और दबे पांव जाकर अपराधी को पीछे से दबोच लिया। अपने जीवन को खतरे में डालकर और बुद्धी-चातुर्य से इन्होंने रक्षा सुरक्षा कोर के उस संतरी को निशस्त्र कर दिया और आत्मसमर्पण के लिए मजबूर किया।

इस प्रकार वारंट अफसर एकम्बरम रमण ने अदम्य साहस, दृढ़ता और उच्चकोटि की कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

2. 181558 राइफलमैन तसुक गुसार, असम राइफल

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 25 जून, 1977)

राइफलमैन तसुक गुसार 25 जून, 1977 को विरोधियों का पीछा कर रहे एक असम राइफल टुकड़ी के अग्रिम स्काउट थे। इन पर विरोधियों ने दो बार गोली चलाई जिसके बाद प्लाटून कमांडर इन्हें वापस भेजना चाहते थे परन्तु वे इस खतरे की परवाह न करते हुए कंपनी कमांडर से आज्ञा लेकर टुकड़ी का निरन्तर नेतृत्व करते रहे। जब यह सैन्य टुकड़ी विरोधियों का पीछा कर रही थी तो अचानक विरोधियों ने इस टुकड़ी पर घात लगाई। राइफलमैन गुसार अपनी ओर गोली चलाने वाले विरोधी की तरफ तत्काल मुड़े और उस पर भीषण प्रहार किया। हाथापाई में इन्होंने विरोधी को उसकी कारबाइन मशीन तथा गोला-बारूद सहित पकड़ लिया। उस विरोधी की सूचना पर दो और विरोधियों को, जंगल में उनके छिपने के गुप्त स्थानों से पकड़ा गया और कुल मैगजीन तथा गोलाबारूद सहित एक और कारबाइन मशीन तथा एक राइफल प्राप्त हुई।

इस सारी कार्रवाई में राइफलमैन तसुक गुमार ने अनुकरणीय साहस, सूझ-बूझ, पहल-शक्ति और असाधारण कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

3. 6272917 कंपनी हवलदार मेजर थिमैया परडंडा जोयप्पा,
सिगनल

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 31 जुलाई, 1977)

कंपनी हवलदार मेजर थिमैया परडंडा जोयप्पा जुलाई, 1977 में श्रीनगर और लेह के बीच नियंत्रण लाइन पर निगरानी रखने वाली एक लाइन डिटैचमेन्ट के इंचार्ज थे । उस क्षेत्र में इससे पहले कई बार तार की स्थायी लाइनों से तांबे के तारों की चोरी हो चुकी थी और चोर पकड़ में नहीं आ रहे थे ।

कंपनी हवलदार मेजर जोयप्पा ने देखा कि ये चोरियां एक ही निश्चित तरीके से की जाती है । इन्हें शक हुआ कि यह काम किसी ऐसे पुराने गिरोह का है जो इस क्षेत्र से भली भांति परिचित है । केवल स्थायी लाइनों से ही जो अक्सर प्रयोग में न आती थी तार चुराए जा रहे थे । 31 जुलाई, 1977 की रात 11 बजे जब ये नियंत्रण लाइन पर गश्त लगा रहे थे तो इन्होंने देखा कि एक आदमी सेना ट्रंक लाईन से चुराई गई तांबे की तार लेकर भागने की कोशिश कर रहा है । इन्होंने तुरन्त अपनी गाड़ी रोकी और चोर के पीछे भागे । इन्हें देखकर चोर अपने साथियों की ओर भागा । काफी देर तक पीछा करने के बाद इन्होंने चोर को पकड़ लिया । भाग निकलने की कोशिश में अपराधियों ने सी एच एम जोयप्पा को चारों ओर से घेर लिया और उन्हें मारने की कोशिश की । इसी समय गश्त कर रहे दो और सिपाही भी घटनास्थल पर पहुंच गए । इस बीच वहां विरोधियों की काफी भीड़ लग गई थी, जो अपराधियों की मदद कर रही थी । सी एच एम जोयप्पा ने अपना धैर्य नहीं खोया और अपने जवानों को प्रोत्साहित किया कि वे चोरों को पकड़ लें । इन्होंने स्वयं भी एक चोर को पकड़ लिया । ऐसा करते समय उनकी गर्दन पर चाकू से घाव भी लग गए । बाद में इन संदिग्ध अपराधियों को पकड़ कर पुलिस के हवाले कर दिया गया ।

इस कार्रवाई में कंपनी हवलदार मेजर थिमैया परडंडा जोयप्पा ने अदम्य साहस, दृढ़-निश्चय और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

4. फ्लाइट लेफ्टिनैंट पुथालथ कैंडी रवीन्द्रन (12821),
वमानिक अभियंता (यांत्रिक)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 4 नवम्बर, 1977)

प्रधान मंत्री तथा कुछ अन्य विशिष्ट व्यक्तियों को 4 नवम्बर, 1977 को टी० यू०—124 विमान से दिल्ली से जोरहाट जाना था, फ्लाइट लेफ्टिनैंट पुथालथ कैंडी रवीन्द्रन, प्रशिक्षणाधीन फ्लाइट इंजीनियर के रूप में इस विमान में तैनात थे । विमान जब हवाई अड्डे पर उतरने की कोशिश कर रहा था तो उसमें बहुत बड़ी खराबी आ गई और विमान जोरहाट हवाई अड्डे से लगभग 6 किलोमीटर दूर जाकर दुर्घटना ग्रस्त हो गया ।

फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट रवीन्द्रन यात्री कक्ष के पिछले भाग में बैठे थे । इन्होंने तत्काल सारी स्थिति को समझ कर विशिष्ट व्यक्तियों तथा अन्य यात्रियों को बड़ी कुशलता से बाहर निकालने की व्यवस्था की और उन्हें विमान से दूर सुरक्षित स्थान पर ले गए । क्योंकि विमान के स्टारबोर्ड इंजन के चारों तरफ आग लगी हुई थी । स्वयं बुरी तरह से जख्मी होने पर भी ये तेजी से पैदल चलकर जोरहाट वायुसेना स्टेशन पहुंचे ताकि यात्रियों को तत्काल आवश्यक डाक्टरी सहायता मिल सके और साथ ही बचाव कार्य किया जा सके । इनके इस प्रयास के फलस्वरूप ही स्टेशन प्राधिकारियों को दुर्घटना स्थल पर यथाशीघ्र डाक्टरी सहायता पहुंचाना संभव हो सका ।

इस कार्रवाई में फ्लाइट लैफ्टिनेंट पुथालथ कैंडी रवीन्द्रन ने साहस, पहल शक्ति तथा उच्च-कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

5. 232550 कार्पोरल केशव नाथ उपाध्याय,
एयरफ्रेम फिटर

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 4 नवम्बर, 1977)

कार्पोरल केशव नाथ उपाध्याय जब वायुसेना मुख्यालय के संचार स्क्वाड्रन में काम कर रहे थे तो इन्हें 4 नवम्बर, 1977 को टी० यू० 124 विमान जो प्रधान मंत्री तथा अन्य विशिष्ट व्यक्तियों को दिल्ली से जोरहाट ले जा रहा था, में ग्राउंड क्रू के रूप में तैनात किया गया । उतरने की कोशिश करते समय विमान जोरहाट हवाई अड्डे से लगभग छः किलोमीटर दूर दुर्घटनाग्रस्त हो गया जिसमें सभी वायुकर्मी मारे गए ।

कार्पोरल उपाध्याय दुर्घटना में घायल हो गए थे परन्तु इस भारी विपत्ति के समय जबकि रात का घुप अंधेरा छाया हुआ था, इन्होंने उत्कृष्ट पहल-शक्ति और असाधारण सूझ-बूझ का परिचय दिया । इन्होंने यात्रियों को आश्वस्त किया और शीघ्र ही विमान का पिछला दरवाजा खोलकर उन्हें शीघ्र ही दुर्घटना ग्रस्त विमान से बाहर निकलने में सहायता की और अन्य व्यक्तियों के साथ उन्होंने प्रधान मंत्री तथा अन्य यात्रियों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया । अपने घावों की परवाह किए बिना वे फिर विमान के पास गए और उसमें से गम्भीर रूप से घायल यात्रियों को सहारा देकर सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया । जब इन्हें विश्वास हो गया कि सभी यात्री सुरक्षित स्थान पर पहुंच गए है तो ये वापस विमान के पास आए और अपनी सुरक्षा की परवाह किए बगैर वायुकर्मी दल के सदस्यों को खोजने लगे । इन्होंने लाशों को खोजने तथा उन्हें मलबे से निकालने में सहायता की । इसके बाद वे फ्लाइट लेफ्टिनेंट रवीन्द्रन के साथ पैदल एयर फोर्स स्टेशन, जोरहाट गए और वापसी में बचाव दल का दुर्घटना स्थल पर पहुंचने में मार्गदर्शन किया ।

इस प्रकार कार्पोरल केशव नाथ उपाध्याय ने घायल होने के बावजूद भी अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना भारतीय वायुसेना की परम्परा के अनुकूल अनुकरणीय साहस, सूझ-बूझ और असाधारण कोटि की कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया ।

6. लेफ्टिनेंट कमांडर पार्था विक्रम चौधरी (00575 एफ)
भारतीय नौसेना ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 23 नवम्बर, 1977)

लैफ्टिनेंट कमांडर पार्था विक्रम चौधरी को भारतीय नौसेना में जुलाई, 1965 में कमीशन दिया गया । नवम्बर, 1977 में, जब ये 321 नौसेना वायु स्क्वाड्रन के फ्लाइट कमांडर थे तो इन्हें आंध्र प्रदेश में, अनकापल्ली और येल्लामंचल्ली तालुकों में जहां चक्रवात तथा भयंकर तूफान के कारण तबाही हो गई थी, बाढ़ राहत कार्य सौंपा गया – इन्होंने 21 और 23 नवम्बर 1977 के बीच सुबह से शाम तक अपने हैलीकाप्टर में कई उड़ाने भरी और लगभग 50 गांवों में बाढ़ की स्थिति का जायजा लेते हुए वहां से लोगों को सुरक्षित स्थानों में पहुंचाने और बाढ़ से घिरे लोगों के लिए हैलीकाप्टर से रसद आदि गिराने का काम किया । इन उड़ानों के दौरान इन्होंने नारियल और ताड़ के लम्बे वृक्षों की ओट में छिपे तेज विद्युतधारा वाले केबलों से घिरे चारों ओर फैले भवनों और झोंपड़ियों में असहाय ग्रामीणों को सहायता पहुचाने के लिए अपने हैलीकाप्टर को बड़ी कुशलता से चलाया । इन उड़ानों के दौरान एक बार इन्होंने बारह ग्रामीणों को, जिनमें एक 70 वर्षीय बूढ़ी महिला भी थी सारदा नदी के एक किनारे पर जो बाढ़ के कारण तेजी से कटता जा रहा था असहाय स्थिति में घिरा हुआ देखा । और उन ग्रामीणों के बह जाने का खतरा था । लेफ्टिनेंट कमांडर चौधरी ने अपनी सुरक्षा की बिलकुल परवाह न करते हुए बड़ी फुरती और सही सलामती के साथ उन 12 असहाय ग्रामीणों को बचा लिया ।

इस प्रकार लैफ्टिनेंट पार्था विक्रम चौधरी ने साहस, दृढ़ता और असाधारण कोटि की व्यावसायिक कुशलता का परिचय दिया

7. श्री श्रीपत, सुपुत्र श्री कुंवर राज लोधी

8. श्री काशीराम, सुपुत्र श्रीकुंवर राज लोधी

9 श्री हर भजन, सुपुत्र श्री मसालती लोधी

10. श्री किशन लाल, सुपुत्र श्री कुंवर राज लोधी

11. श्री हरि लाल, सुपुत्र श्री जगन्नाथ लोधी

12. श्री हक्कू, सुपुत्र श्री जगन्नाथ लोधी

13. श्री भय्या लाल, सुपुत्र श्री अजुधी लोधी

14. श्रीमती बैदे पत्नी श्री ब्रजलाल लोधी
गांव · प्राणपुरा, पुलिस स्टेशन · दिनार,
जिला · शिवपुरी,
मध्य प्रदेश ।

(पुरस्कारों की प्रभावी तिथि 8 दिसम्बर, 1977)

7 और 8 दिसम्बर, 1977 की रात राजेन्द्र सिंह नामक एक कुख्यात डाकू, अपने गिरोह के नौ और डाकुओं के साथ गांव प्राणपुरा, पुलिस स्टेशन दिनार, जिला शिवपुरी (मध्य प्रदेश) में श्री हर भजन लोधी के मकान में घुसा । डाकुओं ने परिवार के लोगों को पीटा और औरतों के गहने उतारने शुरु कर दिए जिससे वे चीखने-चिल्लाने लगी । औरतों की चीख पुकार सुनकर सर्वश्री श्रीपत और उनके भाई काशीराम घटनास्थल पर पहुंचे । गांव के दूसरे लोग भी लाठी और कुल्हाड़िया लेकर वहा जमा हो गये और डाकुओं का मुकाबला करने लगे । डाकुओं ने क्रुद्ध होकर गोलियां चलानी शुरु कर दी । जिसके परिणामस्वरूप सर्वश्री श्रीपत व काशीराम बुरी तरह घायल हो गए । घायल होने के बावजूद भी इन्होंने हिम्मत नही हारी। इन्होंने डाकुओं के नेता राजेन्द्र सिंह और उसके भाई रतन सिंह को पकड़कर जमीन पर पटक दिया। गांव के अन्य लोग सर्वश्री हर भजन किशनलाल, हरि लाल, हक्कू, भय्या लाल और श्रीमती बैदे जिन्हें डाकुओं ने घायल कर दिया था, दौड़कर आए और लाठियों, पत्थर आदि मार कर दोनों डाकुओं को जान से मार दिया । इस मुठभेड में एक और डाकु बुरी तरह घायल हुआ । उन्होंने भागने वाले डाकुओं से एक भरने वाली बंदूक तथा अन्य हथियार भी छीन लिए ।

इस कार्रवाई में सर्वश्री श्रीपत, काशीराम, हर भजन, किशन लाल, हरि लाल, हक्कू और भय्या लाल और श्रीमती बैदे ने अनुकरणीय साहस और उच्चकोटि की दृढ़ता का परिचय दिया ।

15. लैफ्टिनेंट प्रकाश दत्तात्रेय उपोनी (01152 टी),
भारतीय नौसेना

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 7 जनवरी, 1978)

लैफ्टिनेंट प्रकाश दत्तात्रेय उपोनी को 13 जुलाई, 1970 को भारतीय नौसेना में कमीशन दिया गया था । अक्तूबर, 1974 में इन्होंने सफाई गोताखोर (क्लिअरन्स डाईवर) की अर्हता प्राप्त की । 1 जनवरी, 1978 को एयर इंडिया का एक बोइंग 747 विमान बम्बई के पास समुद्र में दुर्घटनाग्रस्त हो गया था । विमान को खोजने तथा समुद्र से निकालने के लिए पश्चिमी नौसेना कमान की सहायता मांगी गई । विमान की खोज के लिए गोताखोरों ने तीन सप्ताह तक भरसक प्रयास किया । इस गोताखोरी अभियान में लैफ्टिनेंट उपोनी शुरु से ही शामिल थे । समुद्र के अन्दर बहुत कम दिखाई देने और तूफान उठने के कारण गोताखोरी का काम बहुत ही कठिन तथा खतरनाक था । तेज लहरों और शार्क मछलियों के होने की संभावनाओं के कारण गोताखोरी का काम और भी अधिक खतरनाक बन गया था ।

इमरजेंसी और ध्वनि श्रवण यंत्र लगाकर लैफ्टिनेंट उपोनी स्वेच्छा से बार-बार गोते लगाते रहे । इन यंत्रों का इन्होंने पहले कभी प्रयोग नही किया था। इन्होंने पानी के अन्दर दुर्घटनाग्रस्त जहाज के इंच-इंच मलबे को टटोला । इस प्रक्रिया में मलबे के दांतेदार किनारों से उनके हाथ, पांव और शरीर में कई जगह गहरी खरोंचें आई । सुरक्षा नाव से बंधी उनकी रस्सी भी मलबे में फंसने से कट गई थी । इसके बावजूद अपनी जान की परवाह न करते हुए इन्होंने पानी के अन्दर खोज जारी रखी और अंत में डिजिटल फ्लाइट रिकार्डर को ढूंढ निकाला और सुरक्षा बोट से 10 मीटर की दूरी पर उसे पानी के बाहर ले आए ।

लैफ्टिनेंट प्रकाश दत्तात्रेय उप्पोनी ने इस कार्य में बहुत साहस, व्यावसायिक कुशलता तथा उच्चकोटि के दृढ़ निश्चय का परिचय दिया ।

16. श्री अनन्दा सोपान सावन्त, सीमैन प्रथम श्रेणी (क्लियरेंस ड्राइवर-III) संख्या 95957, भारतीय नौसेना

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 25 जनवरी, 1978)

सीमैन अनन्दा सोपान सावन्त 26 जनवरी, 1969 को भारतीय नौसेना में भरती हुए । 16 फरवरी, 1977 को इन्होंने क्लियरेंस ड्राइवर के रूप में अर्हता प्राप्त की। 1 जनवरी, 1978 को एयर इंडिया का एक बोइंग 747 विमान बम्बई के पास समुद्र में गिर गया था। समुद्र में इस विमान का पता लगाने और उसका मलवा बाहर निकालने के लिए पश्चिम नौसेना कमान की सहायता मांगी गई । गोताखोरों ने अगले तीन सप्ताह तक विमान के डिजिटल फ्लाइट रिकार्डर और काकपिट वाइस रिकार्डर को खोजने का भरसक प्रयास किया।

सीमैन सावन्त बचाव कार्य में आरम्भ से ही गोताखोरी अभियान दल के सदस्य के रूप में काम कर रहे थे। समुद्र के अन्दर बहुत कम दिखाई देने, समुद्र में तूफान उठने और शार्क मछलियों के कारण गोताखोरी का काम बहुत कठिन तथा खतरनाक था । 24 दिन तक लगातार काम करने के बाद लगभग सभी गोताखोर बुरी तरह थक जाने के कारण हार मान चुके थे। लेकिन सीमैन सावन्त ने अपना काम जारी रखा । इन्होंने दुर्घटनाग्रस्त विमान के इंच-इंच मलबे को टटोला जिससे इस्पात के तेज नुकीले किनारों से इन्हें कई जगह खरोंचें आईं तथा घाव हुए । विषम परिस्थितियों में इन सतत प्रयासों के ही फलस्वरूप समुद्र से काटपिट वाइस रिकार्डर प्राप्त हो सका ।

इस प्रकार सीमन अनन्दा सोपान सावन्त ने इस कार्यवाई में अदम्य साहस, व्यावसायिक कुशलता तथा उच्चकोटि की दृढ़ता का परिचय दिया ।

17. जी/6612, डी० एम० ई० गिरजा शंकर सक्सेना, जनरल रिजर्व इंजीनियर कोर्स (ग्रेफ) ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 7 फरवरी, 1978)

5 फरवरी, 1978 की रात जम्मू तथा कश्मीर में अभूतपूर्व हिमपात हुआ । काजीगुंड की ओर जवाहर सुरंग और लोअर मुंडा के बीच का क्षेत्र बुरी तरह से प्रभावित था । 6 फरवरी को भारी हिमपात हुआ और यह 7 फरवरी, 1978 तक जारी रहा । इससे इस महत्वपूर्ण सड़क पर जो कश्मीर घाटी को जाने का एक मात्र मार्ग था यातायात अत्यन्त अस्त-व्यस्त हो गया । सेना और जनरल इंजीनियर फोर्स के वाहनों के अलावा खाद्य सामग्री से भरे ट्रक और 1200 से अधिक यात्री जो बसों में यात्रा कर रहे थे, लोअर मुंडा और जवाहर सुरंग के बीच, जमा देने वाली ठंड में बिना किसी खाने और रहने की व्यवस्था के फंस गए थे। इन यात्रियों और वाहनों को सुरक्षित जगह तक ले जाने के लिए यह बहुत आवश्यक था कि सड़क से बर्फ हटाई जाए । डी एम ई गिरजा शंकर सक्सेना को अपनी बर्फ काटने की मशीन के साथ इस काम पर लगाया गया । अपने निजी आराम की बिलकुल परवाह न करते हुए इन्होंने सतत हिमपात और अंधा कर देने वाले बर्फानी तूफान में रात-दिन काम करके सड़क साफ करने का काम पूरा किया । अपने अथक प्रयासों के कारण ही ये निर्धारित समय से पहले ही सड़क साफ करने में समर्थ हुए जिससे फंसे हुए वाहन अपने-अपने गंतव्य स्थानों पर पहुंच सके ।

इस कार्यवाई में डी एम ई गिरजा शंकर सक्सेना ने अनुकरणीय साहस दृढ़ता और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

18 सैकेण्ड लेफ्टिनेन्ट रवि बालकृष्ण पाटिल (आई० सी० 34492) (मरणोपरांत)
सिख लाइट इन्फैन्ट्री ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 3 मार्च, 1978)

सैकेण्ड लेफ्टिनेन्ट रवि बालकृष्ण पाटिल 3 मार्च, 1978 की शाम को 55 अप फास्ट पसेंजर रेल गाड़ी से कानपुर से फतेहगढ़ लौट रहे थे। गाड़ी के एक कम्पार्टमेंट में वे अकेले ही थे। लगभग 8 बजे रात मनी मउ स्टेशन पर गाड़ी लगभग 12 मिनट के लिए रुकी। जैसे ही गाड़ी स्टेशन से चली, चार बदमाश जिनके पास चाकू थे. इनके कम्पार्टमेंट में चढ़े और इन्हें लूटने की कोशिश करने लगे। सैकेण्ड लफ्टिनेंट पाटिल इससे भयभीत नहीं हुए और अपने समीप वाले बदमाश को धर पकड़ा और उसी की आड़ में दूसरे बदमाशों के साथ लड़ते रहे । ऐसी विषम परिस्थिति में इन्होंने साहस नहीं खोया और ये अकेले ही इन बदमाशों का लगभग 10 मिनट तक मुकाबला करते रहे। इस गुत्थमगुत्थी में उन पर चाकू के 23 घाव लगे जिससे उनकी एक नस कट गई और दिल में संघातक चोट पहुंची । इनके शरीर से काफी खून निकल गया और अन्ततः ये नीचे गिर गए । इस समय गाड़ी कन्नोज स्टेशन पर पहुंच रही थी ।

इस प्रकार सैकेण्ड लेफ्टिनेंट रवि बालकृष्ण पाटिल ने अदम्य साहस और उच्च कोटि के दृढ़-निश्चय का परिचय दिया ।

19. जी०-135658 श्री बाबू सिंह, सुपरिटेन्डेन्ट बिल्डिंग रोड़-II जनरल रिजर्व इंजीनियर फोर्स (ग्रेफ)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 18 मार्च, 1978)

17/18 मार्च, 1978 को हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जिले में प्रचंड तूफान आया और उसके बाद निरन्तर मूसलाधार वर्षा और भारी हिमपात हुआ । इसके कारण हिन्दुस्तान तिब्बत रोड पर विभिन्न जगहों पर विशाल हिम-खण्ड और भारी चट्टानें गिरीं । इससे जोरी से कैरिक तक का संपूर्ण सड़क मार्ग बुरी तरह टूट-फूट जाने से उसका राज्य के अन्य भागों से संबंध टूट गया । इसके परिणामस्वरूप सैनिक और सिविलियन जनता के लिए रसद आदि पहुंचाने

के लिए यातायात व्यवस्था और सैनिक टुकड़ियों और अन्य कर्मियों की आवाजाही एकदम रूक गई । इसलिए सड़क को तुरन्त साफ करना अत्यन्त आवश्यक हो गया था।

उस क्षेत्र में कई विशाल हिम-खण्ड और चट्टानें टूट कर नीचे आ पड़ी थी । उस क्षेत्र के इंचार्ज श्री बाबू सिंह ने उक्त सड़क साफ करने का काम संभाला । ये निरन्तर घटनास्थल पर मौजूद रहे और अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना, उपलब्ध साधन जुटाते हुए स्वयं कार्य का निरीक्षण करते रहे । इनके साहस और कर्त्तव्यनिष्ठा से इनके साथ काम कर रहे कर्मियों में आत्मविश्वास पैदा हुआ जिससे सड़क की सफाई का काम बस दिन में ही पूरा हो गया, जबकि इस काम पर पूरा एक माह लग सकता था।

इस प्रकार श्री बाबू सिंह ने साहस, नेतृत्व तथा उच्च-कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

20. जी-47478 ओ० ई० एम० रंगास्वामी
जनरल रिजर्व इंजीनियर फोर्स (ग्रेफ)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 18 मार्च, 1978)

हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जिले में 17/18 मार्च, 1978 की रात को तूफान आने और फिर मूसलाधार वर्षा और भारी हिमपात के कारण 300 से 500 किलोमीटर तक की सड़क बन्द हो गयी थी । विभिन्न स्थानों पर बड़े-बड़े हिम-खण्डों के गिरने और भारी भूस्खलन से सारे मार्ग पर यातायात ठप्प हो गया था और फौजों का तथा अन्य कर्मियों का आना-जाना और सिविल आबादी के लिए रसद आदि की सप्लाई पूरी तरह रुक गई थी । कुछ स्थानों पर, जहां अभी लगातार बड़े-बड़े पत्थर गिर रहे थे, सड़क को साफ करने का काम बहुत कठिन और जोखिमपूर्ण था।

श्री रंगा स्वामी, ओ० ई० एम० को अपने डोजर से उन जगहों पर सड़क साफ करने के लिए भेजा गया । ऐसी खतरनाक स्थिति में जब कि ऊपर से बड़े-बड़े पत्थर गिर रहे थे, इन्होंने खतरे की परवाह न करते हुये सड़क साफ करने का काम जारी रखा । यह इनके निर्भीक प्रयासों का फल था कि सड़क को 12 दिन के अंदर ही यातायात के खोल दिया गया, जिसमें अन्यथा एक महीना लग जाता।

इस कार्रवाई में ओ० ई० एम० श्री रंगा स्वामी ने दृढ़ साहस, दृढ़ता और उच्च कोटि की व्यावसायिक कुशलता का परिचय दिया।

1. जी० ओ० 278 श्री राम प्रकाश,
एक्जिक्यूटिव इंजीनियर, (सिविल)
जनरल रिजर्व इंजीनियर फार्स (ग्रेफ)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 19 मार्च 1978)

17/18 मार्च, 1978 को हिमाचल प्रदेश का किन्नौर इलाका तेज तूफान की चपेट में आगया और इसके बाद वहां लगातार मूसलाधार वर्षा और भारी हिमपात हुआ । फलतः विभिन्न जगहों पर विशाल हिमखण्ड टूट कर गिरने लगे और भारी चट्टानें सरकने लगी । जोरों से कैरिक तक का संपूर्ण सड़क मार्ग राज्य के शेष भाग से अलग पड़ गया जिससे इस पूरे क्षेत्र में सड़क संचार व्यवस्था ठप्प हो गई और सैनिकों तथा सिविलियन जनता को सामान पहुंचाने में भारी रुकावट आ गई । इससे सेना की टुकड़ियों और जी० आर० ई० एफ० के कर्मियों की आवाजाही पर भी असर पड़ा।

19 मार्च, 1978 को प्रातः लगभग 1.30 बजे अचानक ही एक विशाल हिमखण्ड सड़क निर्माण कंपनी (जी० आर० ई० एफ०) के कैम्प के पास से होता हुआ नीचे की ओर गया और चार गाड़ियों तथा एक सतरी सहित चैक पोस्ट को अपने साथ बहा ले गया । हिम खण्ड के गिरने की आवाज को सुन कर एक्जिक्यूटिव इंजीनियर (सिविल) और सड़क निर्माण कंपनी के कमांडिंग आफीसर श्री राम प्रकाश अपनी सुरक्षा की परवाह किए बगैर घटना स्थल की ओर दौड़ पड़े और वहां अपनी यूनिट तथा स्थानीय आर्मी यूनिट के अफसरों और कर्मियों की सहायता से बचाव कार्य शुरू किया । इस प्रकार ठीक समय पर की गई कार्रवाई से, इन्होंने चार गाड़ियों वस्त्र और विस्फोटक सहित सारा सरकारी सामान बचा लिया।

टेलीफोन संचार व्यवस्था अस्तव्यस्त हो गई थी, इसलिए अन्य यूनिटों पर हुए भूस्खलन के बारे में तुरंत सूचना नहीं मिल सकती थी । श्री राम प्रकाश ने आठ विशाल हिम-खण्डों को पार करते हुए जगह जगह भूस्खलन के बावजूद तीन दिन में जोरी से पूह तक 124 किलोमीटर की दूरी पैदल चलकर तय की । इन्होंने स्थिति का जायजा लेकर, उपलब्ध साधनों से हिम-खण्डों और भू-स्खलन से प्रभावित क्षेत्रों में अपने आदमियों को काम पर लगाया और स्वयं काम की देख-रेख की । इस प्रकार उस क्षेत्र में महत्वपूर्ण संचार व्यवस्था को फिर से कायम करने का काम 18 दिन में ही पूरा कर दिखाया, जब कि सामान्य रूप से यह काम दो से तीन महीने में पूरा हो पाता।

इस प्रकार श्री राम प्रकाश ने असाधारण साहस, पहल-शक्ति, नेतृत्व तथा उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

22. फ्लाइंग अफसर सुधीर कुमार मिल्ला (14084)
फ्लाइंग (पायलट)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 4 अप्रैल, 1978)

4 अप्रैल, 1978 को फ्लाइंग अफसर सुधीर कुमार मिल्ला एक सुपरसोनिक विमान में प्रशिक्षण उड़ान पर गए । उड़ान भरने के लगभग 30 मिनट बाद जब वे हवाई अड्डे से लगभग 120 नौटिकल मील की दूरी पर पहुंचे तो इनके विमान के विद्युत यंत्र बिलकुल बन्द हो गए । विमान की हाई फ्रिक्वेन्सी/टेलीफोन यन्त्रों ने भी अचानक काम करना बन्द कर दिया । कुछ ही मिनटों में बिजली के दूसरे यंत्र भी बन्द हो गए । उस समय ये रेगिस्तानी क्षेत्र के ऊपर से उड़ रहे थे

और इनके पास कोई रेडियो/टेलीफोन संचार-संपर्क अथवा दिशा निर्देशन वाला कोई यंत्र नहीं रह गया था । भूमि से दिशा का कोई पता नहीं चल रहा था । कुतुबनुमा (कम्पास) की सहायता से जोकि इनके पास एक मात्र दिशासूचक यंत्र रह गया था, ये साहसपूर्वक अपने अड्डे की ओर वापस मुड़े । बिजली बन्द हो जाने से सहायक टंकी के पट्रोल का उपयोग करना भी असंभव हो गया था । पैट्रोल मापक यंत्र भी काम नहीं कर रहा था । इसलिए कम से कम समय में उन्हें उड्डे पर उतरना बहुत जरूरी हो गया था । विमान की इलेक्ट्रिक ट्रिमल प्रणाली भी काम नहीं कर रही थी इसलिए इन्हें विमान के अगले भाग में गुरुत्व केन्द्र लाकर ट्रिम के रास्ते नीचे उतरने के लिए तैयार होना पड़ा ।

अड्डे के पास पहुंचने पर फ्लाइंग अफसर सिह्ना ने उतरने के लिए अपने विमान को नीचे किया तो देखा कि आगे का पहिया एक तरफ को झुका हुआ है । एक तरफ झुके हुए पहिये के साथ विमान को उतारने का परिणाम कितना खतरनाक हो सकता है, इस बात की पूरी जानकारी रखते हुए भी फ्लाइंग अफसर सिन्हा ने विमान उतारने का फैसला किया और विमान को हवाई पट्टी पर उतरते ही तत्काल उसे रोक दिया। इस प्रकार इन्होंने एक बहुमूल्य विमान को नष्ट होने से बचा लिया ।

इस कार्रवाई में फ्लाइंग अफसर सुधीर कुमार सिह्ना ने महान साहस दृढ़ता और उच्चकोटि की व्यावसायिक कुशलता का परिचय दिया ।

23. लेफ्टिनेन्ट कमांडर हरिदास मेघजी गोरी, एन० एम०
(00452 ए०)
भारतीय नौसेना :

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 18 जून, 1978)

18 जून, 1978 को सुबह होने से भी पहले पश्चिमी नौसेना कमान मुख्यालय को टोकियो से दुबई जाने वाले एक व्यापारी जहाज़ अल-हादा से संदेश मिला कि उसमें एक व्यक्ति की हालत बहुत नाजुक है और उसे तत्काल अस्पताल पहुंचाना आवश्यक है । जहाज ने बम्बई बन्दरगाह से बाहर लगभग 15 मील दूर प्रोंग रीफ लाइट के पश्चिम में लंगर डाल दिया था । लैफ्टिनेंट कमांडर हरिदास मेघजी गोरी को उस रोगी को वहां से निकालने के आदेश दिए गए । मौसम बहुत ही खराब था, मुसलाधार मानसूनी वर्षा और तेज हवा के कारण लगभग 500 गज की दूरी तक कुछ नहीं दिखाई देता था । ऐसी स्थिति में जबकि उपलब्ध एलाउट हैलीकाप्टर पर दिशासूचक उपकरण सीमित मात्रा में थे, लेफ्टिनेंट कमांडर गोरी ने उड़ान भरी और व्यापारी जहाज़ का पता लगा लिया ।

व्यापारी जहाज पर हेलीकाप्टर को उतारने के लिए कोई उपयुक्त जगह नहीं थी और फिर तूफान के कारण जहाज के हिलते-डुलते रहने से हेलीकाप्टर को उतारना और भी कठिन था । वे स्थिति की गम्भीरता को अच्छी तरह समझते और उसके निहित खतरे की परवाह न करते हुये उन्होंने जहाज पर उतरने का फैसला किया । बड़ी सूझबूझ का परिचय देते हुए इन्होंने अपने हेलीकाप्टर का संचालन करके उसे डेक के एक छोटे भाग में उतारा और रोगी को वहां से निकाल कर भारतीय नौसैनिक जहाज़ कुजली पर ले जाए जहां से उसे तत्काल अस्पताल पहुंचाया गया ।

इस कार्य में लेफ्टिनेंट कमांडर हरिदास मेघजी गोरी ने अनुकरणीय साहस, दृढ़ता और असाधारण व्यावसायिक कुशलता का परिचय दिया ।

24. जी/44544 ओ० ई० एम० सूरत सिंह,
जनरल रिजर्व इंजीनियर फोर्स (ग्रेफ)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 7 अगस्त, 1978)

जुलाई, 1973 के अंतिम सप्ताह में अभूतपूर्व और लगातार वर्षा होने के कारण ऋषिकेश-जोशीमठ सड़क पर कई जगहों पर बड़ी दरारें पड़ गई थीं जिनसे जिला चमौली और बद्रीनाथ के बीच सड़क यातायात ठप्प हो गया था । चमौली (उत्तर प्रदेश) जिले में घोलतिर के पास सड़क सबसे अधिक खराब थी क्योंकि 31 जुलाई, 1978 को भारी भूस्खलन से यहां पर सड़क बिलकुल बंद हो गई थी । इस जगह पर सड़क साफ करने के अलावा भूस्खलन में दबी एक बस भी बाहर निकालनी थी । ऊपर से बड़े-बड़े पत्थरों के लगातार गिरते रहने से सड़क साफ करने का काम और भी अधिक जोखिमपूर्ण था ।

4 अगस्त, 1978 को सीमा सड़क मुख्यालय के कृतिक दल के ओ० ई० एम० सूरत सिंह को आदेश मिला कि ये अपने डोज़र को लेकर सड़क साफ करने के लिए उक्त स्थान पर जायें । दृढ़ निश्चय और अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए श्री सूरत सिंह ने यह दायित्व स्वीकार किया । इन्होंने 6 अगस्त को सुबह से काम शुरू किया और फिर बिना विश्राम के 7 अगस्त, 1978 की शाम तक सड़क आम यातायात के लिए खोलने में वे सफल हो गए ।

इस कार्रवाई के दौरान इनके डोज़र के दोनों ओर भारी पत्थर और मलबा गिरने से ये कई बार बीच में फंस गए थे लेकिन बड़ी सूझ-बूझ से इन्होंने मलबा साफ किया और उसमें बाहर निकल आए । 7 अगस्त, 1978 को दिन के लगभग साढ़े ग्यारह बजे जब ये डोज़र चला रहे थे तो अचानक एक बड़ी चट्टान डोजर की सीध में नीचे खिसकनी शुरू हुई । ऐसी विकट स्थिति इन्होंने डोज़र से छलांग लगाकर जान बचाने की बजाए डोज़र को सुरक्षित स्थान की तरफ इस तरह मोड़ा कि ये और इनका डोज़र दोनों ही बच गए ।

इस कार्रवाई में ओ० ई० एम० सूरत सिंह ने अदम्य साहस, व्यावसायिक कुशलता, दृढ़ता और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

2. श्री मायाधर साहु,
वार्डर जजपुर सब-जेल,
जिला-कटक (उड़ीसा)
(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 9 अगस्त, 1978)

श्री मायाधर साहूअन्य दो वार्डरों के साथ 9 अगस्त, 1978 की रात को ड्यूटी पर तैनात थे। उस रात पाच ऐसे कैदी जिन पर डकैती का मुकदमा चल रहा था और दो अन्य सजायाफ्ता अपराधी लोहे की सलाखों को तोड़कर भाग निकले। उस समय श्री मायाधर साहू के साथी वार्डर वहा पर हाजिर नही थे। सभी कैदियों ने मुख्य दरवाजे से भागने का प्रयत्न किया परन्तु दरवाजे की चाबिया श्री साहू के पास थीं। कैदियों को भागने से रोकने के लिए श्री साहू बिना किसी हथियार के अकेले ही उनसे भिड़ गए लेकिन कैदियों ने अन्ततः इन्हें दबोच लिया और लोहे के सलाखों से इनके सिर पर वार किए जिस उनकी मत्यु हो गयी।

उक्त घटना के दौरान श्री मायाधर साहू ने महान साहस, दृढ़ता और असाधारण कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

26. स्क्वाड्रन लीडर फ्रांसिस जान विलियम्स (7441)
फ्लाइंग (पायलट)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 3 सितम्बर, 1978)

स्क्वाड्रन लीडर फ्रांसिस जान विलियम्स पश्चिम बंगाल में बाढ़ सहायता कार्य में लगे हुए थे। 3 सितम्बर, 1978 को इन्हें सूचना मिली कि एक परिवार असहाय अवस्था में घास-फूस की झोपड़ी की छत पर बैठा हुआ है जो कसाई नदी की भयंकर बाढ़ से घिरी है। झोंपड़ी का एक हिस्सा पहले ही ढह चुका था और नदी मे आई बाढ़ का पानी उससे बार-बार टकराने के कारण परिवार के सदस्यों का जीवन खतरे में था और उन्हें वहां से निकालना बहुत जरूरी था। लेकिन काम बहुत जोखिम का था क्योंकि उस झोपड़ी के चारों तरफ पानी था और वृक्ष खड़े थे। फिर भी स्क्वाड्रन लीडर विलियम्स रबड़ की नौका युक्त चेतक हैलीकाप्टर में उस जगह पहुंचे। वे हेलीकाप्टर की सीढ़ियों से लटकते हुए रबड़ की नौका में आ गए जहा से इन्होंने संकटग्रस्त व्यक्ति की ओर 'विच केबल" फैंका। इन व्यक्तियों से इन्होंने इशारों में बात की और हवा भारी ट्यूब की सहायता से पहले ही प्रयास में 7 बच्चों सहित कुल असहाय व्यक्तियों को सुरक्षित उपर खींच लिया। इस तरह घिरे हुए सभी 21 व्यक्तियो को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाने के लिए हैलीकाप्टर ने यही क्रिया तीन बार दोहराई।

इस कार्य मे स्क्वाड्रन लीडर फ्रांसिस जान विलियम्स ने महान साहस, दृढ़ता और उच्च कोटि की व्यावसायिक कुशलता का परिचय दिया।

27. 1538922 सैपर हरबंस सिंह,
इंजीनियर्स
(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 4 सितम्बर, 1978)

दिल्ली में बाढ़ के दौरान यमुना के पूर्वी तट पर स्थित तीन गांवों के निवासियों को बाढ़ से निकालने का काम 4 सितम्बर, 1978 को इंजीनियर रेजिमेंट की एक टुकड़ी को सौंपा गया था। सूबेपुर गाव के बाढ़ से घिरे लोगों को निकालने के लिए लगाई गई नौका के चालकों में सैपर हरबंस सिंह भी शामिल थे? सायं 5.30 बजे महिलाओं और बच्चों को ला रही एक नाव एक भीषण लहर की चपेट में आ गई। इससे नाव में सवार लोग आतंकित हो उठे। वे सब नाव की एक ओर आ गए और कुछ पानी मे कूद गए। नाव उलट गई और उस पर सवार सभी लोग नदी में गिर गए। सैपर हरबंस सिंह तत्काल बच्चो को पानी से निकाल कर वापस उसी नौका में चढ़ाने लगे जिससे अन्य चालकों ने सीधा कर दिया था। इन्होंने तीन जाने बचाई और अन्य लोगों को बचाने के लिए ये तैर कर डूबती हुई महिलाओं और बच्चों की तरफ बढ़े। उन सबने अपनी जान बचाने के लिए हताश होकर सैपर हरबंस सिंह को पकड़ लिया। सैपर हरबंस सिंह ने इन लोगों को सुरक्षित स्थान पर लाने का भरसक प्रयास किया। परन्तु बुरी तरह से थक जाने के कारण वे नौका तक नही पहुंच सके और डूब गए।

इस कार्रवाई में सैपर हरबंस सिंह ने अनुकरणीय साहस, दृढ़-निश्चय और उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

28 जी/55453 ड्रिलर गेंदा राम,
जनरल रिजर्व इंजीनियर फोर्स (ग्रेफ)
(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 25 सितम्बर, 1978)

18 और 19 सितम्बर, 1978 की भारी वर्षा में उत्तर सिक्किम राजमार्ग का लगभग 76 मीटर लम्बा भाग बिलकुल बह गया था। इस सड़क को पुन. चालू करना अत्यंत आवश्यक था और यह कार्य पहाड़ी को काट कर एक नई सड़क बनाने से ही किया जा सकता था। इस जगह पर पहाड़ बहुत कच्चा होने के कारण पहाड़ी को काटने का कार्य बहुत जोखिम भरा था। परन्तु इस जोखिम की परवाह न करते हुए ड्रिलर गेंदा राम पहाड़ी को काटने के लिए स्वेच्छा से तैयार हो गए।

25 सितम्बर, 1978 को जब ड्रिलर गेंदा राम पहाड़ी को काटने में व्यस्त थे तो एक भारी चट्टान खिसक कर नीचे की ओर आई और अपने साथ उन्हे भी नीचे घाटी मे ले गई। जब वे भारी पत्थरों के साथ लुढ़क रहे थे तब भी उन्होंने अपना होश-हवास नही खोया था और लुढ़कते शिलाखंड से अपने आपको बचाने का भरसक प्रयास किया। उनका यह प्रयास असफल रहा और बाद में मस्तिष्क रक्तस्राव से उनकी मृत्यु हो गई। उन्हें बचाने के लिए अच्छी से अच्छी चिकित्सा की व्यवस्था की गई परन्तु उन्हें नही बचाया जा सका।

इस प्रकार ड्रिलर गेंदा राम ने अनुकरणीय साहस, दृढ़-निश्चय और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

नई दिल्ली, दिनांक 26 जनवरी 1979

सं० 17-प्रेज/79 राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्ति को वीरता के लिये "शौर्य चक्र का बार" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

जी०/59320 ओ० इ० एम० भगवान सिंह
जनरल रिजर्व इंजीनियर फोर्स (ग्रेफ)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 7 फरवरी 1978)

5 और 7 फरवरी, 1978 जम्मू और कश्मीर में भारी हिमपात हुआ । हिमपात का सब से ज्यादा असर जवाहर सुरंग और लोअर मुंडा के बीच काजीगुंड की ओर 30 किलोमीटर सड़क पर पड़ा । इस प्रकार यातायात बुरी तरह अस्त-व्यस्त हो गया और जवाहर सुरंग तथा लोअर मुंडा के बीच बसों में यात्रा कर रहे 1200 से भी अधिक यात्री बिना ठिकाने और खाने के असहाय हालत में कड़कड़ाती सरदी में ठिठुरते रहे । सेना तथा जनरल रिजर्व इंजीनियर फोर्स की माल से लदी बहुत सी गाड़ियां भी रास्ते में ही घिरी हुई थी । इन गाड़ियों तथा यात्रियों को सुरक्षित जगह पहुंचाने के लिए सड़क को साफ कर उसे यातायात योग्य बनाने का काम ओ० इ० एम० भगवान सिंह को सौंपा गया । ये अपनी बरफ साफ करने की मशीन से इस काम में जुट गए । कार्य जोखिमपूर्ण होने पर भी ओ० ई० एम० भगवान सिंह ने अपनी जान की परवाह किए बगैर और लगातार हिमपात तथा बर्फानी तूफानों के बीच दिनरात काम करके एक रिकार्ड समय में सड़क को यातायात योग्य बना दिया । इस प्रकार उनके अथक प्रयास से घिरे हुए यात्री तथा गाड़ियाँ अपने गंतव्य स्थान तक पहुंच सकी ।

इस कार्रवाई में ओ० ई० एम० भगवान सिंह ने अदम्य साहस, दृढ़ निश्चय और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

खेम राज गुप्ता,
राष्ट्रपति के उप-सचिव

वित्त मंत्रालय

राजस्व विभाग

नई दिल्ली, दिनांक 9 अप्रैल 1979

संकल्प

सं० एफ०—20016/2/78—समन्वय—वित्त मंत्रालय (राजस्व विभाग) के दिनांक 30 अक्तूबर 1978 के संकल्प सं० एफ०—20016/2/78—समन्वय में एतद्द्वारा निम्नलिखित संशोधन किया जाता है :—

(क) वर्तमान प्रविष्टि (I) (क) के स्थान पर निम्नलिखित प्रविष्टि रखी जाएगी :—

(i) (क) अध्यक्ष-उप प्रधान मंत्री तथा वित्त मंत्री

(ख) वर्तमान प्रविष्टि (vi) के बाद निम्नलिखित जोड़ा जाएगा :—

(vi) विशेष सचिव (पुनरीक्षण याचिका)

(ग) वर्तमान प्रविष्टि सं० (vii), (viii), (ix) तथा (x) को पुनर्संख्यांकित करके क्रमशः (viii), (ix), (x) तथा (xi) कर दिया जाएगा ।

(घ) पुनर्संख्यांकित प्रविष्टि (xi) के बाद निम्नलिखित जोड़ा जाएगा :—

(xii) अतिरिक्त सचिव (पुनरीक्षण याचिका)

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक एक प्रतिलिपि राष्ट्रपति सचिवालय, प्रधान मंत्री कार्यालय, मंत्रिमंडल सचिवालय, संसदीय कार्य विभाग, लोक सभा सचिवालय, राज्य सभा सचिवालय, योजना आयोग, भारत के नियंत्रक महालेखा परीक्षक, लेखा महा नियंत्रक, महालेखाकार, केन्द्रीय राजस्व, भारत सरकार के सभी मंत्रालयों और विभागों, प्रेस सूचना कार्यालय, मुख्य लेखा नियंत्रक, केन्द्रीय उत्पादन शुल्क तथा सीमा शुल्क बोर्ड, केन्द्रीय उत्पादन शुल्क/सीमा शुल्क के सभी समाहर्ताओं, नार्कोटिक्स आयुक्त और सीमा शुल्क तथा केन्द्रीय उत्पादन शुल्क सलाहकार परिषद् के सभी सदस्यों को भेजी जाए ।

यह भी आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को आम सूचना के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाय ।

एम० वेंकटरमन, अपर सचिव

वाणिज्य, नागरिक पूर्ति और सहकारिता मंत्रालय

(नागरिक पूर्ति और सहकारिता विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 2 अप्रैल 1979

संकल्प

सं० आर० 11013 (3)/77 समन्वय—भारत सरकार के खाद्य कृषि, सामुदायिक विकास और सहकारिता मंत्रालय (सहकारिता विभाग) के 16 नवम्बर 1966 के संकल्प संख्या 5-67 66-यू०टी०बी० एण्ड० सी० में सहकारी विकास से सम्बन्धित नीतियां बनाने तथा उन्हें कार्यान्वित करने के बारे में भारत सरकार को सलाह देने के लिये 2 वर्ष की अवधि के लिये एक सलाहकार समिति गठित की गई थी । यह समिति समय-समय पर पुनर्गठित की गई और पिछली पुनर्गठित सलाहकार परिषद का कार्यकाल 21 मार्च, 1977 को समाप्त हुआ । तब से इस मंत्रालय में इस परिषद के पुनर्गठन पर विचार किया जा रहा था । अब केन्द्रीय सहकारिता परिषद् का पुनर्गठन करने का निर्णय किया गया है, जिसमें निम्नलिखित सदस्य होंगे :—

1. श्री मोहन धारिया — अध्यक्ष
वाणिज्य नागरिक पूर्ति और सहकारिता मंत्री,
नई दिल्ली ।

2. श्री कृष्ण कुमार गोयल, — उपाध्यक्ष
वाणिज्य, नागरिक पूर्ति और सहकारिता
मंत्रालय, में राज्य मंत्री, नई दिल्ली ।

3. सदस्य, (कृषि), योजना आयोग,
नई दिल्ली ।

4. सचिव, नागरिक पूर्ति और सहकारिता
विभाग, नई दिल्ली ।

5. सचिव, कृषि और ग्राम विकास विभाग
नई दिल्ली ।

6. अतिरिक्त सचिव,
ग्राम विकास विभाग,
नई दिल्ली ।

7. सचिव, वित्तीय कार्य
विभाग, नई दिल्ली ।

8. वित्तीय सलाहकार,
नागरिक, पूर्ति और सहकारिता
विभाग, नई दिल्ली ।

9. उप गवर्नर,
रिजर्व बैंक आफ इंडिया,
नई दिल्ली ।

10. अध्यक्ष,
भारतीय राष्ट्रीय सहकारी संघ,
नई दिल्ली ।

11. अध्यक्ष, अखिल भारतीय राज्य
सहकारी बैंक संघ मर्यादित,
बम्बई ।

12. अध्यक्ष, भारतीय राष्ट्रीय कृषि
सहकारी विपणन संघ मर्यादित,
नई दिल्ली ।

13 अध्यक्ष,
राष्ट्रीय सहकारी भूमि विकास बैंक
संघ मर्यादित, बम्बई ।

14. अध्यक्ष,
राष्ट्रीय सहकारी उपभोक्ता संघ मर्यादित,
नई दिल्ली ।

15. अध्यक्ष,
राष्ट्रीय सहकारी चीनी कारखाना
संघ मर्यादित, नई दिल्ली ।

16. अध्यक्ष,
राष्ट्रीय औद्योगिक सहकारी समिति, संघ, मर्यादित
नई दिल्ली ।

17. अध्यक्ष,
राष्ट्रीय सहकारी आवास संघ मर्यादित,
नई दिल्ली ।

18. अध्यक्ष,
अखिल भारतीय सहकारी कताई मिल संघ मर्यादित,
बम्बई ।

19. अध्यक्ष,
भारतीय राष्ट्रीय सहकारी डेरी, संघ, नई दिल्ली ।

20. अध्यक्ष,
अखिल भारतीय हथकरघा वस्त्र विपणन सहकारी समिति मर्यादित,
नई दिल्ली ।

21. अध्यक्ष,
राष्ट्रीय शहरी सहकारी बैंक तथा ऋण समिति संघ मर्यादित,
नई दिल्ली ।

22. श्री तात्या साहेब कोरे
वारना नगर, जिला कोल्हापुर
(महाराष्ट्र) ।

23. श्री कमल देव नारायण, सिन्हा,
सर्वोदय आश्रम, डाकघर, रानी पत्रा-854337
जिला पूर्णिया (बिहार) ।

24 श्री विश्वनाथ पुरी
परगीत गंज, कपूरथला (पंजाब) ।

25 श्री पी० एस० राजगोपाल नायडू
सकारा निलायम
8-ए०, त्यागराजापुरम, एक्सटेंशन,
नार्थ आरकोट, वेल्लौर-632001

26. संयुक्त सचिव
नागरिक पूर्ति और सहकारिता विभाग
(प्रभारी-बहु राज्य सहकारी समिति अधिनियम)
नई दिल्ली ।

2. सहकारिता संबंधी वाणिज्य, नागरिक पूर्ति और सहकारिता मंत्रालय की संसदीय परामर्शदात्री समिति के कार्यकारी दल के सदस्य परिषद की बैठकों में स्थायी आमंत्रित होंगे ।

3. परिषद के विचारार्थ विषय निम्नलिखित होंगे :—

(i) सरकार को देश में सहकारी विकास से संबंधित व्यापक नीति मामलों के बारे में सलाह देना ;

(ii) सहकारी विकास से संबंधित नीतियों के कार्यान्वयन में राष्ट्रीय सहकारी संस्थाओं की भूमिका पर विचार करना और उनके कार्यों तथा गतिविधियों के दृष्टिकोण में एकरूपता लाना ; और

(iii) बहु-राज्य सहकारी समितियों की प्रगति और कार्य का पुनरीक्षण करना ।

4. परिषद की बैठक जितनी बार आवश्यक होगी उतनी बार बुलाई जा सकेगी ।

5. परिषद का कार्यकाल 2 वर्ष होगा ।

आदेश

आदेश है कि संकल्प की प्रति सभी संबंधितों को भेजी जाये । यह भी आदेश है कि यह संकल्प आम सूचना के लिये भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाये ।

के० नारायणन, संयुक्त सचिव

संचार मंत्रालय

नई दिल्ली-110001, दिनांक 21 मार्च 1979

स० जे० 20016/1/75-डब्ल्यू० एफ०—यत : भारत संयुक्त राष्ट्र संघ के विशेष अधिकरण, अन्तर्राष्ट्रीय दूर संचार संघ का सदस्य है ।

यत : जिनेवा में 1977 में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय दूर संचार संघ विश्व प्रसारण उपग्रह प्रशासनिक रेडियो सम्मेलन में लिए अन्तिम निष्कर्षों के अनुसार (क्षेत्र 2 एवं 3 में) 11.7—12.2 जगाह-टेंज, और (क्षेत्र 1 में) 11.7—12.5 जगाहर्टज आवृत्ति पट्टियों में, प्रसारण उपग्रह सेवा द्वारा आवृत्तियों के प्रयोग पर एक करार हो गया है ।

अत : अब, सार्वजनिक जानकारी के लिए सूचित किया जाता है कि भारत सरकार ने सन् 1977 में जिनेवा में हुए विश्व प्रसारण उपग्रह प्रशासनिक रेडियो सम्मेलन के अन्तिम निष्कर्षों को जो 1 जनवरी, 1979 से प्रवृत्त होंगे, स्वीकार कर लिया है ।

बलबीर सिंह नरगम, उप वेतार सलाहकार,

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 26th January 1979

No. 15—Pres./79.—The President is pleased to approve the award of KIRTI CHAKRA to the undermentioned persons for acts of conspicuous gallantry :—

1. Kumari Bina,
daughter of Shri Yogeshwar Dayal,
Village Asauda, Police Station Hapur,
District Ghaziabad,
Uttar Pradesh.

(*Effective date of the award 27th July*, 1976)

On the night of 27th/28th July, 1976, some armed dacoits tried to break into the house of Shri Haridatt, son of Shri Bhadradatt, of Asauda Village, Ghaziabad District. Hearing the noise the neighbours woke up and started collecting outside the house. Sensing danger and in their bid to escape, two of the dacoits jumped into the house of Shri Yogeshwar Dayal, who was at that time sleeping in the court-yard. This aroused Shri Yogeshwar Dayal who got up and tried to catch one of the dacoits. The dacoit fired at him with a country-made pistol and wounded him. Seeing that Shri Yogeshwar Dayal was wounded, his fourteen year old daughter Kumari Bina, picked up a pounder and started hitting at the two dacoits and felled them on the ground. One of the dacoits died on the spot and the other injured dacoit was captured alive with the help of the neighbours who had arrived on the scene. Some illegal arms were recovered from the dacoits.

In this action, Kumari Bina displayed conspicuous courage, undaunted determination and presence of mind of an exceptional order.

2. Shri Nathan Singh, (*Posthumous*)
Village Baighai,
District Guna,
Madhya Pradesh.

(*Effective date of the award 29th April*, 1977)

On the night of 29th April, 1977, ten dacoits armed with a .12 bore gun, lathis and scythes, entered the house of Shri Badam Singh son of Shri Khuman Singh Nandvanshi of Baighai Village and started beating the inmates and looting their property. Shri Nathan Singh son of Shri Ramlal Yadav, who was living nearby, on hearing the cries and the sound of gun fire, picked up his lathi and rushed towards the house. On the way, he woke up and informed Shri Daleep Singh, another neighbour. When he reached the house of Shri Badam Singh, Shri Nathan Singh was confronted by dacoit Bhaboot Singh, who fired at him with his gun but missed. Shri Nathan Singh hit Bhaboot Singh with his lathi as a result of which the dacoit could not use his gun. Shri Dalcep Singh also reached the spot and wielded his lathi on the dacoit who had come to the rescue of Bhaboot Singh. Sensing danger, the dacoits fled away, but Shri Nathan Singh chased them. After covering some distance, dacoit Bhaboot Singh fell down and Shri Nathan Singh grappled with him. During the scuffle, the dacoit got a chance and fired from his gun which resulted in instant death of Shri Nathan Singh. The dacoit, Bhaboot Singh, who had received severe injuries also succumbed on the spot.

In this action, Shri Nathan Singh displayed conspicuous courage and determination of a very high order.

3. 7998461 : Naik Pratap Singh, (*Posthumous*)
Intelligence Corps.

(*Effective date of the award* : 10*th June*, 1977)

On the 10th June, 1977, Naik Pratap Singh was kidnapped by hostiles from a tea shop in Darlawn village in Mizoram and taken to a nearby jungle. There he was brutally tortured, but he did not divulge any information about the troops. Undaunted by the torture and the imminent danger to his life, he also rejected their offer to release him which was made to induce him to cooperate with them. Thereafter the hostiles tied a rope around his neck, dragged him for about three kilometres and when he tried to escape, they hit him with a log on his head and, later, drove a bamboo spike through his head.

In this action, Naik Pratap Singh displayed conspicuous courage, undaunted determination and devotion to duty of the most exceptional order.

4. Shri Kayum Khan, (*Posthumous*)
Driver,
Road Transport Corporation,
Madhya Pradesh.

(*Effective date of the award* : 23*rd August*, 1977)

Shri Kayum Khan, aged 50 years, was a driver of the Madhya Pradesh Road Transport Corporation at its Nagpur Depot since 1974. On the night of 22nd August, 1977, he was detailed to take the Nagpur-Allahabad night express bus. He left Nagpur Depot at the scheduled time of 2200 hours with about fifty passengers and reached Seoni at about 0110 hours on 23rd August, 1977. On its onward journey towards Jabalpur, the bus was delayed by an hour when its tyre burst near Bandol Police Station.

At about 04.30 hours, when the bus was near village Mohgaon, and three kilometers south from Dhuma Police Station, one of the passengers, who was later identified as dacoit Sehjad, took out his pistol and asked the driver to stop the bus under threat of dire consequences. As the threat did not move the driver, Sehjad shot at him in his left hip. Though injured, driver Kayum Khan, who was conscious of the imminent threat to the life and property of the passengers, continued to drive the bus by negotiating the steering wheel with his right hand and tried to grapple with the dacoit with his left hand. The dacoit again fired on the forehead of the driver. This shot was fatal and the driver collapsed leaving the bus to dash slowly against a tree. After this, the other five associates of Sehjad got up and deprived two passengers of their bags containing Rs. 56,000/- and Rs. 50,000/- injured a passenger, Shri Kishanlal, and disappeared in the adjoining jungles.

All these dacoits were arrested by the district police on the same day after intensive search and almost the entire looted property and two country made pistols, were recovered from them.

In this action, Shri Kayum Khan displayed conspicuous courage, determination and devotion to duty of a high order.

5. JC 46163 Subedar Bakhtawar Singh, (*Posthumous*)
Punjab Regiment.

(*Effective date of the award* : 30*th November*, 1977)

On the 30th November, 1977, Subedar Bakhtawar Singh was the JCO Incharge of a firing bay from where rifle grenades were being fired by the personnel of his unit during field firing. At approximately 1545 hours, one firer fired his rifle grenades. Due to some malfunctioning, the tube and the grenade did not leave the launcher cup, but the safety lever and priming ring flew off activating the grenade.

The Fire Controlling Officer ordered the rifle with the grenade to be thrown away outside the firing bay. The firer threw away the rifle, but it fell just about a metre from the firing bay. As the rifle with the grenade had not been thrown to a safe distance, Subedar Bakhtawar Singh jumped out of the firing bay, picked up the rifle and threw it further away to ensure the safety of others present on the range. However, while he was in the process of taking cover, the grenade exploded. The splinters from the grenade hit him, causing serious injuries to which he succumbed a short while later.

In this action, Subedar Bakhtawar Singh displayed conspicuous courage, determination and devotion to duty of a high order.

6. Group Captain Denzil Keelor, Vr. C. (4805), Flying (Pilot).

(*Effective date of the award* : 27*th March*, 1978)

On the 27th March, 1978, while Group Captain Denzil Keelor was flying a combat aircraft at high altitude, its canopy flew off and this exposed him to explosive decompression and severe wind blast. His eyes, ear-drum and left arm were injured and he experienced great difficulty in controlling the aircraft. Although abandoning the aircraft in the circumstances would have been justified, he decided to recover the aircraft. Under these adverse conditions, wherein he was not able to have a proper view due to wind blast and that too only with one eye, he brought the aircraft back to base and executed a safe emergency landing.

Again on 17th May, 1978, during a live air-to-air sortie, a 23-mm High Explosive shell burst as it left the gun muzzle. Shrapnel damaged the aircraft and caused total electrical failure and a serious throttle restriction. he cone extended fully and the associated engine rumbling and surge gave every indication of engine bearing failure. Without electric instruments and Radio Telephony, Group Captain Keelor had no way either of knowing what had happened or of asking for assistance. Assuming that the engine bearing had failed, he decided to attempt an emergency recovery. With his flying skill and experience, he returned to the air-field, set up a flame out pattern and executed a safe landing. The throttle was stuck at 60% revolutions per minute and, in spite of this, he was able to stop the aircraft without damage.

Group Captain Denzil Keelor thus displayed conspicuous courage, exemplary professional skill and devotion to duty of an exceptional order.

7. G/32874 Sub-Overseer
Ram Dulare Lal, (*Posthumous*)
General Reserve Engineer Force.

(*Effective date of the award* : 14*th September*, 1978)

On the 13th September, 1978, Sub-Overseer Ram Dulare Lal of 376 Road Maintenance Platoon was deployed to supervise the clearance of a slide on a mountain road. This slide, where boulders frequently hurtle down from great heights during the monsoon, is considered dangerous. Ever since the road was opened to traffic, this slide had been active.

Two dozers were deployed to clear the slide and to make the road fit for traffic. At about 1800 hours, a dozer become unserviceable due to the left track chain getting disengaged from Idler and sprocket wheel in the middle of the slide point and there was every possibility of its being damaged by heavy rolling boulders or being carried down into the valley. On seeing this, Shri Ram Dulare Lal, in utter disregard to his personal safety, organised clearance of the slide and recovery of the dozer. He and all the men under his command remained on the job throughout the night.

On the morning of 14th September, 1978, when the work was still going on, all of a sudden boulders started falling from the top of the hill. He immediately warned every one to run away for safety but a stray flying boulder hit him on his temple and killed him.

In this action, Sub-Overseer Ram Dulare Lal displayed conspicuous courage, undaunted determination and devotion to duty of a very high order.

No. 16-Pres.—The President is pleased to approve the award of SHAURYA CHAKRA to the undermentioned persons for acts of gallantry:

1. 210729 Warrant Officer Ekambaram Raman, Reader Fitter.

(*Effective date of the award* : 29th *April*, 1977)

On the night of 28th/29th April, 1977, a Defence Security Corps sentry on duty at technical area gate deserted his post with a service rifle, shot dead two DSC personnel in DSC Billet and took shelter behind double security fencing near the locked gate. All efforts to apprehend him failed. He took position near the gate and threatened to shoot any one who would approach him. Thus the entry to the technical area was completely blocked. When all efforts to apprehend him failed, Warrant Officer Ekambaram Raman, Orderly Officer, was briefed by the Commanding Officer, and he organised a party of armed airmen and DSC Jawans and surrounded the area where the alleged assassin was standing. Himself armed with a service revolver, he gained entry to the technical area through barbed wire fencing and stealthily approached the culprit from behind. At great personal risk and by a clever move, he succeeded in disarming the DSC sentry and obtaining his surrender.

In this action, Warrant Officer Ekambaram Raman displayed great courage, determination and devotion to duty of a very high order.

2. 181558 RIFLEMAN TASOK GUSAR,
Assam Rifles.

(*Effective date of the award* : 25th *June* 1977).

On 25th June, 1977, Rifleman Tasok Gusar was the leading scout of one of the columns of Assam Rifles which was engaged in pursuit of the hostiles. The platoon Commander wanted to relieve him from his position after tht hostiles had fired at him twice, but he sought permission to continue leading the column-inspite of the risk involved in the task. During the pursuit, the column was ambushed. Rifleman Gusar immediately turned to the hostile firing at him and charged him fiercely. He over powered him in a hand to hand fight and captured him with his carbine machine and its ammunition. From the information provided by the hostile, two more hostiles were captured from their jungle hide-out and one more carbine machine and a rifle were recovered, with some magazines and ammunition.

Throughout this action, Rifleman Tasok Gusar displayed exemplary courage, presence of mind, initiative and devotion to duty of an exceptional order.

3. 6272917 Company Havildar
Major Thimaiah Paradanda Joiappa,
Signals.

(*Effective date of the award*—31st *July* 1977)

Company Havildar Major Thimaiah Paradanda Joiappa was in charge of the Line Detachment located along the line of Control between Srinagar and Leh, in July, 1977. Earlier a number of thefts of copper wire on permanent line route had taken place in that sector and it had not been possible to trace the thieves.

Company Havildar Major Joiappa noticed a set pattern in these thefts. He suspected it to be the work of an old gang with full knowledge of the area. The wire was stolen only from the PL pairs not in constant use. On 31st July, 1977, at 2300 hours while carrying out line patrolling, he saw a person trying to get away with the stolen copper of Army trunk route. He immediately stooped the vehicle and chased the culprit, who on seeing him, had started running towards his companions. He over-took the culprit after a long chase. In their bid to escape, the culprits, who were seven in number, surrounded CHM Joiappa and tried to hit him. In the meantime, two Other Rank, who were a part of the patrol also reached the spot where a huge hostile crowd had gathered to support the culprits. CHM Joiappa did not lose his calm and encouraged his men to catch the thieves. He himself caught hold of one of them. While doing so, he also sustained knife injuries on his neck. The suspects were subsequently handed over to the Police.

In this action, Company Havildar Major Thimaiah Paradanda Joiappa displayed great courage, determination and devotion to duty of a very high order.

4. Flight Lieutenant Puthalath Kandy Raveendran (12821) Aeronautical Engineering (Mechanical)

(*Effective date of the award* : 4th *November*, 1977)

Flight Lieutenant Puthalath Kandy Raveendran was on attachment as under-training Flight Engineer when he was

detailed on a TU-124 aircraft to fly Prime Minister and other dignitaries from Delhi to Jorhat, on 4th November, 1977. While the aircraft was in the process of making an approach for landing, disaster struck and the aircraft crashed about six kilometeres from Jorhat airfield.

Flight Lieutenant Raveendran, who was sitting in the rear passenger cabin, immediately took stock of the situation and organised systematic evacuation of the dignitaries and other passengers from the aircraft He helped them to leave the aircraft quickly and guided them to a safe distance from the aircraft as fire was seen around its starboard engine Even though badly injured, he quickly walked to Air Force Station Jorhat in order to get the urgently needed medical and rescue facilities. This enabled the Station authorities to reach the scene of the accident, along with medical aid, in the shortest possible time.

In this action, Flight Lieutenant Puthalath Kandy Raveendran displayed courage, initiative and devotion to duty of a very high order.

5. 232550 Corporal Keshav Nath Upadhya, Airframe Fitter.

(*Effective date of the award* : 4th *November*, 1977).

Corporal Keshav Nath Upadhaya was on the posted strength of Air HQ Communication Squadron when he was detailed to fly as a ground crew on a TU-124 aircraft carrying the Prime Minister and other dignitaries from Delhi to Jorhat on 4th November, 1977. The aircraft, in the process of making an approach for landing, crashed about six kilometers from Jorhat airfield and all the aircrew members were killed.

Corporal Upadhaya sustained injuries during the accident; but he displayed outstanding initiative and exceptional presence of mind in the face of this grave emergency in pit dark night conditions. He re-assured the passengers , quickly opened the rear door of the aircraft and rendered valuable assistance to the passengers in leaving the crash aircraft quickly. Along with others, he guided the Prime Minister and other passengers to safety. Notwithstanding his personal injuries, he went back to physically assist some of the seriously injured passengers to reach a safe location. After ensuring that all the passengers were safe, and in total disregard to personal safety and comfort he went back to the crashed aircraft again, and searched for the aircrew members. Corporal Upadhaya helped in locating the bodies and assisted in extricating them from the wreckage. There after, he accompanied Flight Lieutenant Raveendran on foot to Air Force Station, Jorhat and guided the rescue party back to the site of the accident.

In this action Corporal Keshav Nath Upadhaya displayed exemplary courage, presence of mind and devotion to duty of an exceptional order with total disregard to personal safety and comfort, in spite of his own injuries, in the best tradition of the Indian Air Force.

6. Lieutenant Commander Partha Bikram Chowdhuri (00575-F3, Indian Navy.

(*Effective date of the award* 23*rd November*, 1977)

Lieutenant Commander Partha Bikram Chowdhuri was commissioned in the Indian Navy in July, 1965. In November, 1977, when he was Flight Commander of 321 Naval Air Squadron, he was assigned the task of flood relief operations in Anakapalli and Yalamanchalli Taluqa in Andhra Pradesh which were devastated due to the cyclone and tidal waves. Between 21st and 23rd November, 1977, he flew several sorties from dawn to dusk in his helicopter carrying out reconnaissance, evacuation, search and food dropping, covering about 50 villages. During these sorties, he piloted his helicopter with great professional skill in approaching scattered buildings and hutments, which were hidden behind thick growth of tall Coconut and Palmyra trees and were surrounded by high tension electric cables, to render succour to the stranded groups of villagers. During one of these sorties, he spotted twelve stranded villagers, including a seventy year old woman, marooned on an isolated embankment of the Sarda river which was swiftly being eroded and posed an immediate danger to these villagers. Lt. Cdr Chowdhuri with great alacrity, speed and precision, successfully evacuated the 12 stranded villagers in total disregard to his personal safety.

In this action, Ltd Cdr. Partha Bikram Chowdhuri displayed courage, determination and professional skill of an exceptional order.

7. Shri Shreepat S/o Shri Kunwar Raj Lodhi

8. Shri Kashiram s/o Shri Kunwar Raj Lodhi

9. Shri Har Bhajan s/o Shri Masalti Lodhi

10. Shri Kishan Lal s/o Shri Kunwar Raj Lodhi

11. Shri Hari Lal s/o Shri Jagannath Lodhi

12. Shri Hakkoo S/o Shri Jagannath Lodhi

13. Shri Bhayya Lal S/o Shri Ajudhi Lodhi

14. Shrimati Baide W/o Shri Brijlal Lodhi

Village : Pranpura, Police Station : Dinara, District Shivpuri (M.P.)

(*Effective date of the awards* : 8*th December* 1977)

On the night of 7th and 8th December, 1977, a notorious dacoit, Rajendra Singh, along with nine other dacoits of his gang; raided the house of Shri Har Bhanjan Lodhi in village Pranpura, Dinara Police Station, Shivpuri District (Madhya Pradesh). They beat up the inmates and began to snatch ornaments worn by the women folk, who started screaming On hearing their screams, Sarvashri Shreepat and his brother, Kashiram, rushed to the spot Other villagers also assembled with lathies and axes and a fight with the dacoits ensued. Enraged, the dacoits opened fire causing serious injuries to Sarvashri Shreepat and Kashiram. Despite these injuries, Sarvashri Shreepat and Kashiram did not lose courag They caught hold of the dacoit leader Rajindra Singh and his brother, Rattan Singh, and threw them on the ground Other villagers, Sarvashri Har Bhajan, Kishanlal, Hari Lal, Hakkoo, Bhayya Lal and Smt. Baide, who were also injured by the dacoits, rushed on and attacked both dacoits with lathis, stones etc. and killed them. One more dacoit was seriously injured in the encounter. They were also successful in snatching a muzzle loading gun and other weapons from the dacoits who took to their heels.

In this action, Sarvashri Shreepat, Kashiram, Har Bhajan, Kishanlal, Hari Lal, Hakko and Bhayya Lal and Shrimati Baide, displayed exemplary courage and determination of a high order.

15. Lieutenant Prakash Dattatraya Upponi (01152T), Indian Navy.

(*Effective date of the award* : 7*th January*, 1978)

Lieutenant Prakash Dattatraya Upponi was commissioned in the Indian Navy on 13th July, 1970. He qualified as a Clearance Diver in October, 1974. On 1st January, 1978, an Air India Boeing 747 crashed into the sea off Bombay. The Western Naval Command was called upon to render assistance to locate and salvage the aircraft. During the next three weeks, a major diving effort had to be mounted and Lieutenant Upponi was involved in the diving operations from the start of this rescue work. The diving conditions throughout were extremely difficult and hazardous due to poor underwater visibility and rough sea. The diving was made even more treacherous by strong currents and the potential danger of sharks.

Lt. Upponi volunteered to dive again and again with earphones and acoustic set which he had never used before. Every inch of his search underwater had to be made by groping through the debris. In the process his hands, feets and body received cuts from the jagged pieces of metal of the wreckage. His distance line to the safety boat was caught in the wreckage and was severed. Despite this, he continued to search underwater in total disregard to his personal safety and finally retried the Digital Flight Recorder and surfaced about ten metres away from the safety boat.

In this action, Lieutenant Prakash Dattatraya Upponi displayed great courage, professional skill and determination of a very high order.

16. Ananda Sopan Sawant,
Seaman First Class
(Clearance Diver-III) No.95957,
Indian Navy.

(Effective date of the award : 25th January 1978)

Seaman Ananda Sopan Sawant joined the Indian Navy on 26th January, 1969. He qualified as a Clearance Diver on 16th February, 1977. On 1st January, 1978, an Air India Boeing 747 Crashed into the sea off Bombay. The Western Naval Command was called upon to render assistance to locate and salvage the aircraft. During the next three weeks a major diving effort was mounted for salvage and recovery of the Digital Flight Recorder and the Cockpit Voice Recorder of the aircraft.

Seaman Sawant was a member of the diving operations from the start of the rescue work. The diving conditions throughout were extremely difficult and hazardous due to poor underwater visibility, the rough sea and the presence of the sharks. Even after twentyfour days of sustained diving when fatigue was beginning to over-power most other divers, Sawant continued to dive. He groped through every inch of the wreckage and his body received several cuts and injuries from the jagged steel edges of the wreckage. His determined efforts against over-whelming odds were rewarded in the end when he finally retrieved the Cockpit Voice Recorder from the wreckage.

In this action Seaman Ananda Sopan Sawant displayed great courage, professional skill and determination of a very high order.

17. G/6612DME Girja Shankar Saxena,
General Reserve Engineer Force.

(Effective date of the award : 7th February, 1978)

On the night of 5th February, 1978 unprecedented heavy snow-fall started in Jammu and Kashmir. The area between Jawahar Tunnel and Lower Munda towards Quazigund were to worst effected. The intensity of the snow-fall became very heavy on 6th February and continued till 7th February, 1978. This resulted in serious dislocation of traffic on this important road, which is the life line of Kashmir Valley. Besides Army and GREF vehicles and trucks carrying food stuffs, over 1200 people travelling in passenger buses were stranded between Lower Munda and Jawahar Tunnel without food and shelter in Freezing cold. In order to move these man and vehicles to a safer place, it was of paramount importance to get the road cleared of snow. DME Girja Shankar Saxena, with his snow Cutting Machine was deployed on this job. In utter disregard to his personal comforts, he carried out the task by working round the clock under conditions of continuous heavy snow fall and blinding blizzards. By his untiring efforts he was able to clear the road in a record time enabling the stranded vehicles to reach their destinations.

In this action, DME Girja Shankar Saxena displayed exemplary courage, determination and devotion to duty of a very high order.

18. 2/Lieutenant Ravi Balkrishna Patil (IC 34492) (*Posthumous*) Sikh Light Infantry.

(Effective date of the award—3rd March 1978)

On the evening of 3rd March, 1978, 2/Lieutenant Ravi Balkrishna Patil was returning by the 55 Up Fast Passenger train from Kanpur to Fatehgarh. He was the lone passenger in a compartment of the train At about 2000 hours, the train stoped at Mani Mau station for about 12 minutes. As his train began to move out of the station, four miscreants, armed with knives, entered his compartment and attempted to rob him. Undaunted, 2/Lt. Patil caught hold of the miscreant nearest to him and, using him as a shield, fought with them Single handed, he put up a very courageous fight against overhelming odds for almost ten minutes During the fight, he sustained twenty three knife wounds, including the severing of an artery and a fatal stab to his heart. He finally fell bleeding profusely just as the train steamed into Kanauj station.

2 Lieutenant Ravi Balkrishna Patil thus displayed great courage and determination of high order.

19. G-135658, Shri Babu Singh,
Superintendent Building/Road II,
General Reserve Engineer Force.

(Effective date of the award : 18th March 1978)

On the night of 17th/18th March, 1978, Kinnaur District of Himachal Pradesh was struck by a stormy weather followed by incessant torrential rains and heavy snow fall. This caused enormous avalanches and massive rock-slides at various locations on the Hindustan-Tibet Road. The entire road stretch from Jeori to Kaurik was adversely affected and was cut off from the rest of the State. As a result, all traffic carrying supplies to Army and Civil population and the movement of troops and other personnel got blocked. The job of clearing the road became of paramount importance.

Shri Babu Singh, who was Incharge of the Sector where a number of major avalanches and massive rock-slides had occurred, undertook the work to clear the road. He remained present at the site mobilised the meagre resources available to him and, without caring for his own safety, personally supervised the work. His courage and devotion to duty inspired confidence in his men and the road was clearance of those sites. Braving all risks, he continued would have taken a full month.

Shri Babu Singh thus displayed courage, leadership and devotion to duty of a very high order.

20. G-47478 OEM Ranga Swamy,
General Reserve Engineer Force.

(Effective date of the award : 18th March 1978)

On the night of 17th/18th March, 1978, the road between kilometres 300 and 500 in Kinnaur District of Himachal Pradesh, was struck by a stormy weather followed by incessant and torrential rains and heavy snow-fall. This caused enormous avalanches and massive rock-slides at various locations disrupting entire traffic on the route. As a result, the movement of troops and other personnel and supplies to civil population got completely blocked. The road clearance work was particularly difficult and risky at certain sites where boulders were continuously falling.

OEM Ranga Swamy was deployed with his dozer, for clearance of those sites. Braving all risks, he continued clearing the rock slides even amidst shooting boulders. It was due to his undeterred efforts that the road was opened to traffic within a period of twelve days which would otherwise have taken a month.

In this action, OEM Ranga Swamy displayed great courage, determination and devotion to duty of a very high order.

21. (GO-278) Shri Ram Prakash,
Executive Engineer (Civil),
General Reserve Engineer Force.

(Effective date of the award : 19th March 1978)

On the night of 17th/18th March, 1978, the Kinnaur District of Himachal Pradesh was struck by a severe stormy weather followed by incessant torrential rains and heavy snow fall. This triggered off enormous avalanches and massive rock slides at various locations. The entire road stretch from Jeori to Kaurik was completely cut off from the rest of the State resulting in dislocation of road-communication in the entire sector and in disruption of the flow of supplies to Army and Civilian population. This also affected the movement of troops and GREF personnel.

On 19th March, 1978, at about 0130 hours, a major avalanches suddenly struck near the camp of a Road Construction Company (GREF) and carried away four vehicles and the Sentry Check Post with one Sentry in it. Immediately on hearing the unusual noise of the rolling avalanches, Shri Ram Prakash, Executive Engineer (Civil) and Officer Commanding Road Construction Company, rushed to the spot without caring for his own safety and organised rescue operations with the help of officers and personnel of his unit and local Army Units. Due to this timely action, all the Government stores, including the four vehicles, clothing and explosive, were retrieved.

As telephone communications were also completely disrupted and no reports could be expected in regard to thte land slides at various other detachments, Shri Ram Prakash walked right from Jeori to Pooh covering 124 kilometers in three days, through eight major avalanches, while rock-slides on the route were still active. He assessed the situation, mobilised the available resources and deployed his men in areas affected by the avalanches and rock slides and personally supervised the work. The task of restoring vital communications in that area, which would have taken two or three months under normal working conditions, was thus completed in a record time of 18 days.

Shri Ram Prakash thus displayed great courage, initiative, leadership and devotion to duty of a high order.

22. Fling Officer Sudhir Kumar Sinha (14084), Flying (Pilot).

(Effective date of the award : 4th April 1978)

On 4th April, 1978, Flying Officer Sudhir Kumar Sinha got airborne in a supersonic aircraft on a training flight. Approximately thirty minutes after take-off and about 120 nautical miles away from the base, his aircraft had a total electrical failure. His very high Frequency/Telephony sets suddenly faded out and, within a couple of minutes, the other electrical services ceased to function. Left without Radio/Telephony contact or any navigational aids over the desert terrain, which had very few land marks, he calculated his course and headed back to base with the help of the stand by compass which was the only direction indicating instrument available to him. The electrical failure also made it impossible for him to use the entire contents of the auxiliary fuel tank and the fuel gauges were inoperative. He, therefore, had to land back at base in the shortest possible time. His electrical trimmer systems were also inoperative and he had to prepare himself for landing out of trim with a forward centre of gravity configuration.

On his return to base, Flying Officer Sinha lowered his under-carriage in preparation for landing and found that his nose wheel cocked to one side. With full knowledge of the disastrous consequences which could result on landing with a cocked nose wheel, Flying Officer Sinha elected to go ahead and brought the aircraft under control immediately after touchdown. He thus saved a valuable aircraft which would otherwise have been lost.

In this action, Flying Officer Sudhir Kumar Sinha displayed great courage, determination and professional skill of a very high order.

23. Lieutenant Commander Haridas Meghji Gori, NM (00452-A) Indian Navy.

(Effective date of the award : 18th June 1978)

In the early hours of 18th June, 1978, a message was received by Headquarters Western Naval Command from a merchant ship Al-Hada on passage from Tokyo to Dubai that she had a critically ill patient on board who required immediate evacuation for hospitalisation. The ship had anchored for this purpose about 15 miles west of Prongs Reef Light outside Bombay harbour. Lt. Cdr. Haridas Meghji Gori was ordered to evacuate the patient. The weather conditions at that time were extremely adverse. The torrential monsoonic rains accompanied by strong winds brought the visibility down to approximately 500 yards. Undeterred by the adverse weather conditions, and with limited navigational aids on board the Allouttee III helicopter, he got air-borne and flew out to sea and located the merchant ship.

There was no proper helipad on board the merchant ship. The inadequacy of the landing facility was further aggravated due to the ship rolling and pitching in the rough sea. The touch-down on deck was, therefore, an extremely hazardous task. Fully aware of the gravity of the situation and the risk involved, Lt. Cdr. Gori decided to land on board the ship. He manouevered his helicopter on to the restricted deck space on the ship and evacuated the patient to Indian Naval Ship Kunjali from where he was rushed to the hospital.

In this action, Lieutenant Commander Haridas Meghji Gori displayed exemplary courage determination and professional skill of a very high order.

24. G/44544 OEM Surat Singh
General Reserve Engineer Force.

(Effective date of the award : 7th August, 1978)

The unprecedented and incessant rain-fall during the last week of July, 1978, caused major road breaches at various points on the Rishikesh-Joshimath Road, dislocating the road traffic to District Chamoli and Badrinath. The worst affected site was near Gholtir in Chamoli District (UP) where a huge land slide which had occured on 31st July, 1978, had completely blocked the road. Apart from the clearance of this road, a civil bus which got buried under the land-slide, was also to be recovered. The active slides, with shooting boulders continuously rolling down, had made the clearance task very hazardous.

On 4th August, 1978 OEM Surat Singh of HQ Border Roads Task Force was ordered to move his dozer to the affected area for the clearance operation. With firm determination and in total disregard to his own safety, he accepted the risk sNb?8k-uP ETAO ETAOI ETAOI ETAOIN NN ed the task and worked with his dozer almost non-stop from the morning of 6th August, and cleared the road for thorough traffic by the evening of 7th August, 1978.

During this operation, he was often trapped between heavy slides on either side of his dozer, but he skilfully managed to clear and come out from these traps. On 7th August, 1978, at about 1130 hours while OEM Surat Singh was operating the machine, a huge rock suddenly started sliding down straight at his dozer. In the face of this hazard, instead of saving his life by jumping out of the dozer, he moved his machine to a safer place in such a way that he saved himself as well as his machine.

In this operation, OEM Surat Singh displayed undaunted courage, professional skill, determination and devotion to duty of a very high order.

25. Shri Mayadhar Sahu, *(Posthumous)*
Warder, Jaipur Sub-Jail,
District Cuttack (Orissa).

(Effective date of the award : 9th August, 1978)

Shri Mayadhar Sahu was on duty on the night of 9th August, 1978 along with two other Warders. That night, five under-trial prisoners standing trial in dacoity cases along with two convicts managed to escape by breaking open the iron bars. At that time, the co-warders of Shri Mayadhar Sahu were absent from duty. The entire gang of prisoners tried to escape through the main gate but Shri Sahu who had the keys of the main gate with him, fought them, single handed and without any weapons, to prevent the prisoners from escaping, but he was overpowered by them. He was given fatal blows on his head with an iron rod to which he succumbed.

In this, action, Shri Mayadhar Sahu displayed great courage, determination and devotion to duty of an exceptional order.

26. Squadron Leader Francis John Williams (7441), Flying (Pilot).

(Effective date of the award : 3rd September, 1978)

Squadron Leader Francis John Williams was engaged in the flood relief operations in West Bengal when, on 3rd September, 1978 he received information that a marooned family was perched on top of a thatched hut surrounded by swirling waters of the river Kasai. A portion of that hut had already collapsed and, due to its continuous lashing by the water of the flooded river, the lives of the members of that family were in danger and their evacuation was necessary. This was a hazardous task as there was water and trees around the hut. However, he reached the area in a float modified Chetak helicopter. He went down on to the float and hung himself against the 'step'. He pulled out the winch cable and threw it to the bewildered people. Explaining in sign language and with the help of an inflated

tube, he pulled in eight emaciated individuals, including seven babies, to safety in the first attempt. The helicopter repeated the mission three more times to carry out the recovery of all the twenty one trapped people.

In this action, Squadron Leader Francis John Williams displayed great courage, determination and professional skill of a very high order.

27. 1538922 Sapper Harbans Singh, Engineers. *(Posthumous)*

(Effective date of the award : 4th September, 1978)

On 4th September, 1978, during floods in Delhi, a detachment of an Engineer Regiment was deployed to evacuate residents of three villages situated on the eastern bank of the Yamuna. Sapper Harbans Singh was one of the crew in a boat which was evacuating people from Subepur village. At 1730 hours, a boat which was carrying mostly women and children, was hit by a massive wave. This created panic in the mind of the people in the boat. They shifted to one side and some of them jumped into the river. The boat capsized and all the occupants were thrown into the river. Sapper Harbans Singh lost no time and started rescuing children by putting them back into the boat, which was corrected by other crew members. He saved three lives and, in a bid to save others, he swam towards a group of drowning women and children. In panic and desperation, all of them caught hold of him in a bid to save their lives. Sapper Harbans Singh who made desperate efforts to take them to safety got completely exhausted and as he could not make towards the boat, he was drowned.

In this action, Sapper Harbans Singh displayed exemplary courage, determination and devotion to duty of a high order.

28. G/55453 Driller Genda Ram, General Reserve Engineer Force. *(Posthumous)*

(Effective date of the award : 25th September, 1978)

Due to heavy rains on 18th and 19th September, 1978, a portion of the road measuring about seventy-six metres, on the North Sikkim Highway was completely washed away. The restoration of the road which was of paramount importance required cutting a new road alignment by drilling in the hill side. The hill at the site was unstable and it was considered extremely risky to undertake drilling operation. Undaunted by the risk involved, Driller Genda Ram volunteered and undertook drilling of the hill side.

On 25th September, 1978, while Driller Genda Ram was busy with his drilling operations, a huge rock-slide came down carrying him along into the valley below. Even while rolling down with boulders, he did not lose his presence of mind and made efforts to extricate himself from the rolling mass. He did not succeed in his efforts and subsequently died of brain haemorrhage from which he could not be revived despite the best available medical treatment.

Driller Genda Ram thus displayed exemplary courage, determination and devotion to duty of a very high order.

N 17-Pres /79—The President is pleased to approve the award of *BAR* to SHAURYA CHAKRA to the undermentioned person for acts of gallantry:—

G/59370 OEM Bhagwan Singh,
General Reserve Engineer Force.

(Effective date of the award : 7th February 1978)

There was heavy snowfall in Jammu and Kashmir during 5th and 7th February, 1978. The thirty kilometre long stretch of road which lies between Jawahar Tunnel and Lower Munda towards Quazigund was the worst effected by the snow fall. As a result there was serious dislocation of traffic on the road and over 1200 people travelling in passenger buses were stranded between Lower Munda and Jawahar Tunnel without food and shelter in the freezing cold. A large number of Army and GREF Vehicles and trucks carrying goods also got stranded in the area. In order to move these passengers and vehicles to a safer place, OEM Bhagwan Singh was deployed with his snow clearance machine to clear the road for traffic. In complete disregard to his personal comforts and the risk involved, he worked round the clock under conditions of continuous and heavy snow fall and blinding blizzards and cleared the road for traffic within a record time. His untiring efforts thus enabled the stranded people and vehicles to proceed to their, destination.

In this action, OEM Bhagwan Singh displayed great courage, determination and devotion to duty of a high order.

K. R. GUPTA,
Deputy Secretary to the President.

MINISTRY OF FINANCE
(DEPARTMENT OF REVENUE)

New Delhi, the 9th April 1979

RESOLUTION

No. F-20016/2/78-Coord.—The Ministry of Finance (Department of Revenue) Resolution No. F-20016/2/78-Coord, dated the 30th October, 1978, is hereby amended as under :—

(a) For the existing entry (i) (a), the following shall be substituted :—

(i) (a) Chairman—Deputy Prime Minister and Minister of Finance.

(b) After the existing entry (vi), the following shall be added :—

(vii) Special Secretary (Revision Applications).

(c) The existing entries (vii), (viii), (ix) and (x), shall be re-numbered as (viii), (ix), (x) and (xi) respectively;

(d) After the re-numbered entry (xi), the following shall be added :—

(xii) Additional Secretary (Revision Applications).

ORDER

ORDERED that a copy of this Resolution be communicated to the President's Secretariat, Prime Minister's Office, Cabinet Secretariat, Department of Parliamentary Affairs, Lok Sabha Secretariat, Rajya Sabha Secretariat, Planning Commission, Comptroller and Auditor General of India, Controller General of Accounts, Accountant General, Central Revenues, all Ministries and Departments of the Government of India, Press Information Bureau Chief Controller of Accounts, Central Board of Excise and Customs, All Collectors of Central Excise/Customs, Narcotics Commissioner, and all Members of the Customs and Central Excise Advisory Council.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

S. VENKATARAMAN
Addl. Secy.

MINISTRY OF COMMERCE, CIVIL SUPPLIES & COOPERATION
(DEPARTMENT OF CIVIL SUPPLIES & COOPERATION)

New Delhi-110001, the 2nd April 1979

RESOLUTION

No. R-11013/3/77-Coord.—In Government of India, Ministry of Food, Agriculture, Community Development & Cooperation (Department of Cooperation) Resolution No

5-67/66-UTB&C, dated the 16th November, 1966 a Consultative Committee for advising the Government of India on the formulation and implementation of policies relating to cooperative development was set up for a term of two years The Committee was reconstituted from time to time and the term of the last reconstituted Consultative Council on Cooperation expired on 21st March, 1977 Since then, the question of reconstitution of this Council was being considered in this Ministry It has now been decided to reconstitute a Central Council on Cooperation with the following members —

1 Shri Mohan Dharia —*Chairman*
Minister for Commerce,
Civil Supplies and Cooperation,
New Delhi

2 Shri Krishan Kumar Goyal, —*Vice-Chairman*
Minister for State in the
Ministry of Commerce,
Civil Supplies & Cooperation,
New Delhi

3 Member (Agriculture)
Planning Commission,
New Delhi

4 Secretary,
Department of Civil Supplies &
Cooperation, New Delhi

5 Secretary,
Department of Agriculture &
Rural Development,
New Delhi.

6. Additional Secretary,
Department of Rural Development,
New Delhi.

7 Secretary,
Department of Economic Affairs,
New Delhi

8. Financial Adviser,
Department of Civil Supplies & Cooperation,
New Delhi

9 Deputy Governor,
Reserve Bank of India,
Bombay

10. President,
National Cooperative Union of India,
New Delhi

11. Chairman,
All India State Co-operative Bank,
Federation Ltd
Bombay

12 Chairman,
National Agricultural Cooperative Marketing,
Federation of India Limited,
New Delhi

13 Chairman,
National Cooperative Land Development
Banks Federation Ltd,
Bombay

14 President,
National Cooperative Consumers
Federation Limited,
New Delhi.

15 Chairman,
National Federation of Cooperative
Sugar Factories Limited,
New Delhi

16 Chairman
National Federation of Industrial
Cooperatives Ltd,
New Delhi

17 Chairman
National Cooperative Housing Federation Ltd,
New Delhi

18 President
All India Federation of Cooperative
Spinning Mills Limited,
Bombay

19 President,
National Cooperative Dairy Federation
of India,
New Delhi

20 President,
All India Handloom Fabrics Marketing
Cooperative Society Ltd,
Bombay

21 Chairman,
National Federation of Urban Cooperative
Banks and Credit Societies Limited,
New Delhi

22 Shri Tatya Saheb Koiay,
Warna Nagar, Distt Kolhapur,
(Maharashtra)

23 Shri Kamal Deo Narayan Singh
Sarvodaya Ashram, Post Rani Patra 854337,
District Purnea (Bihar)

24 Shri Vishwanath Puri,
Paramjeet Gunj,
Kapurthala (Punjab)

25 Shri P S Rajagopal Naidu,
Sankara Nilayam,
8-A, Thyagarajapuram Extension,
North Arcot, Vellore 63001

26 Joint Secretary,
Department of Civil Supplies & Cooperation,
New Delhi
(Incharge, Multi State Cooperative Societies Act)

2 Members of the Working Group on Cooperation of the Parliamentary Consultative Committee of the Ministry of Commerce, Civil Supplies and Cooperation, will be permanent invitees to the meetings of the Council

3 The terms of reference of the Council will be as follows —

(i) To advise the Government on broad policy matters relating to co-operative development in the country,

(ii) To consider the role of national co-operative organizations, in the implementation of policies relating to co operative development and bringing uniformity of approach in their functions and activities, and

(iii) To review the progress and performance of Multi-State Co-operative Societies

4. The Council will meet as often as necessary.

5. The term of the Council will be for a period of two years.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all concerned. Ordered also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

K. NARAYANAN
Jt. Secy.

MINISTRY OF COMMUNICATIONS

New Delhi-110001, the 21st March 1979

No. J. 20016/1/75-WF.—Whereas India is a member of the International Telecommunication Union, Geneva, a specialised Agency of the United Nations Organisation.

Whereas an Agreement concerning the use by the Broadcasting Satellite Serving in Frequency Bands 11.7—12.66 GHz (in Regions 2 and 3) and 11.7—12.5 GHz (in Region 1) was made through the Final Acts of the World Broadcasting Satellite Administrative Radio Conference of the International Telecommunication Union held in Geneva in 1977.

Now, therefore, it is general information that the Government of India, have accepted the Final Acts of the World Broadcasting Satellite Administrative Radio Conference Geneva, 1977 effective from 1st January, 1979.

B. S. NARGAS
Dy. Wireless Adviser

PRINTED BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, FARIDABAD
AND PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI, 1979